श्री नाथमत नमः

''विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग''

विषयः- ''सतयुगी विधान''

१. संकटकाल की इस घड़ी में भारत सरकार तथा विश्व सरकारों को अध्यात्म विज्ञान की शरण में आकर अवतारवाद की मदद लेनी आवश्यक है विश्व मानवता को बचाने के लिए।

२. वंशवाद, जातिवाद, परिवारवाद, पूंजीवाद, अर्थात् सभी तरह के वाद विश्व मानवता की कोई मदद नहीं कर पाएंगे। ये वाद ही विश्व मानवता को मौत के मुंह में धकेल देंगे। इतिहास इसका साक्षी है। यथास्थितिवादी परिवर्तन नहीं चाहते हैं। मगर परिवर्तन प्रकृति का नियम है। यह युग परिवर्तन का अंतिम समय है। जो संक्रमणकाल था वह निपट चुका है। यथास्थितिवादी इसमें सारे वादी शामिल है। उनकी समय सीमा समाप्त हो चुकी है।

३. दो तरह की विज्ञानें प्राचीनकाल से चली आ रही है भौतिक विज्ञान तथा अध्यात्म विज्ञान। इस समय भौतिक विज्ञान ने सही दिशा में जितनी उन्नति करनी थी कर ली। अब इससे आगे अध्यात्मक विज्ञान उन्नति करेगा। ऐसी महर्षि श्री अरविन्द की भविष्यवाणी है। जो सत्य प्रमाणित होकर रहेगी। भौतिक विज्ञान की चरम सीमा तक उन्नति के महाविनाश से कुछ मानवता को अध्यात्म विज्ञान बचा लेगा जो इस योग्य होंगे। केवल उन्हें बचाया जा सकेगा। बाइबल में वर्णित सहायक उन चुने हुओं को बचाने आएगा। सनातन धर्म में भविष्यवाणियां है। अध्यात्म विज्ञान से ही ईश्वर का अवतार आज तक हुआ है। भारत का अध्यात्म विज्ञान विश्व को मान्य होगा। भारत विश्वगुरु होगा।

४. संहार काल सन् २०२० की पहली तिमाही से प्रारम्भ हो चुका है विश्व मानवता का। नेस्त्रोदमस की भविष्यवाणी के अनुसार विश्व की ६६ प्रतिशत आबादी विभिन्न प्रलयों में मारी जाएगी। ६६ प्रतिशत आबादी के मरने तक यह प्रलयकाल। संहारकाल शिव अवतारी बाबा श्री गंगाईनाथ जी के कमाण्ड में जारी रहेंगे।

५. साथ ही ३३ प्रतिशत विश्व मानवता को बचाने हेतु अथक प्रयास कल्कि अवतार की तस्वीर के नेतृत्व में जारी रखने पड़ेंगे। जिसमें सरकारों की हठ धर्मिता यदि बाधक बनी तो उन सरकारों को उखाड़ फेंका जाएगा। बाधक हटा दिए जायेंगे। ३३ प्रतिशत विश्व मानवता अपने ही सहस्त्रार में विराजमान परमात्मा रूपी कल्कि अवतार से सीधी जुड़कर बचेगी। यह बात कर्मकाण्डियों तथा पाखण्डियों के गले नहीं उतरेगी। अतः उन्हें नेस्तनाबूद किया जाकर मार्ग से हटा दिया जाएगा। फिर ३३ प्रतिशत मानव अपने मन मंदिर से जुड़कर प्रलयों से बचेंगे। सबसे बड़ा मंदिर मानव का शरीर जिसमें परमात्मा प्रकट होकर उस शरीर को बचाएंगे।

६. विश्व स्वास्थ्य संगठन भौतिक विज्ञान का पूर्णतः विफल रहेगा। जैविक हमलों, अणु परमाणु हमलों, रासायनिक हमलों तथा प्राकृतिक प्रकोपों से मानवता को बचाने में। न तो उसके पास कोई अग्रिम सूचना जाएगी और न हीं वह किसी मानव को उपरोक्त हमलों से बचा सकेगा। अतः विश्व मानवहित में कल्कि अवतार की एक व्यवस्था है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की बागडोर कल्कि शिष्यों को सौंपी जाना। ताकि उस प्लेटफोर्म से कल्कि शिष्य ज्यादा से ज्यादा विश्व मानवों को विभिन्न प्रलयों में अपनी अनुभूतियों के आधार पर बचाने में मददगार बन सके। यह सबसे बड़ी मानवता की सहस्त्रार सेवा होगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्लेटफोर्म का सदुपयोग किया जाएगा।

७. नेटवर्क दो तरह के होते हैं भौतिक विज्ञान की किरणों तथा अध्यात्क विज्ञान की किरणों का। दोनों अपनी अपनी जगहों पर कार्य करते रहेंगे। मगर परमाणु बम हमलों के दौरान उन्हीं का भौतिक विज्ञान का नेटवर्क ध्वस्त हो चुका होगा। विफल हो जाएगा। भौतिक विज्ञान की किरणों पर आधारित व्यवस्था प्रणाली विफल हो जाएगी। उसे तत्काल बहाल नहीं किया जा सकेगा। ऐसे में चेतन कल्कि शिष्य अपनी अध्यात्म विज्ञान के दिव्यप्रकाश की किरणों की प्रणाली से विश्व मानवता की मदद करेंगे। अपना कार्य अध्यात्म विज्ञान की प्रणाली से प्रलयकाल में भी जारी रख सकेंगे। अतः कल्कि शिष्यों से विनम्र अपील है मानव शरीररूपी ग्रन्थ की भौतिक विज्ञान के मोबाइल की भांति मंत्रजप तथा ध्यान से चार्ज तथा रिचार्ज करते रहें। अन्यथा अध्यात्म विज्ञान के एक्सचेंज से सम्पर्क टूट सकता है। तो आपकी डाउन लाइन अंधेरे में भटक जाएगी। अतः विश्व मानव हित में स्वयं को चार्ज तथा रिचार्ज अवश्य करें। यह विश्व मानवता की सहस्त्रार सेवा होगी।

८. प्रयोजन बहुद्देशीय रखकर चलना होगा। अपना अस्तित्व, अपने परिवार का अस्तित्व अपनी डाउन लाईन का अस्तित्व बचाने का बहुद्देशीय प्रायोजन रखकर चलना हितकर रहेगा। मुकाम बहुत ऊंचा तथा दूर भी है मगर केवल सफलता ही एक रास्ता है। दूसरा कोई विकल्प नहीं है। पीछे हट नहीं सकते। पीछे हटने का मतलब तीनों स्तरों पर मौत। अतः जीते जी डटना ही होगा। ये केवल सहस्त्रार से संचालन होगा। उससे नीचे मत उतरना, तो अपने सहस्त्रार के माध्यम से परमात्मा सहस्त्रार सेवा कर देंगे।

९. भानुमति एक नया शब्द है। भविष्य की अनुभूति जिसका शाब्दिक अर्थ है। यह भविष्य का सारा मार्गदर्शन आपको अपने शरीर के अन्दर से सहस्त्रार से मिलता रहेगा। क्योंकि आपके सहस्त्रार में आपके परमात्मा विराजमान है २४ घंटे तथा ३६५ दिन। वह एक्सचेंज कभी बन्द नहीं होगा। उसे चार्ज तथा रिचार्ज रखें। तब दोनों जुड़े रह पाएंगे आत्मा और परमात्मा अथवा एकाकार रहेंगे। नामजप को कभी ढ़ीला मत छोड़ना। तो ही सहस्त्रार सेवा हो पाएगी।

१०. संकटकाल में सभी साधकों तथा आराधकों का सघन नामजप। अजपा चलता रहना चाहिए। तभी हम विश्व धर्मयुद्ध में विजयी हो पाएंगे। आजतक का सबसे बड़ा तथा विश्वव्यापी धर्मयुद्ध है। जिसका प्रतिफल विश्व मानवता को आगामी ७००० वर्षों तक मिलता रहेगा। इतने बड़े लक्ष्य को लेकर हमें इस धर्मयुद्ध में चैत्र शुक्ल एकम वर्ष प्रतिपदा सम्वत २०७७ से उतर जाना चाहिये। विलम्ब घातक।
११. वैरायटीः- नई आएगी धर्म के क्षेत्र में। लीक से हटकर। जो नया पथ। समझने और अनुशरण में देर अवश्य लगेगी। मगर स्थाई प्रभाव डालेगी। धर्म का नए सिरे से उत्थान होगा। मानव मन मन्दिर चेतन होंगे। पत्थरों से हटकर रास्ता मोड़ना कठिन अवश्य है परन्तु ये अवश्यम्भावी हो जाएगा। प्रकृति के कहर मुड़ने हेतु मजबूर कर देंगे। जान बचाने हेतु।
१२. सत्यम् शिवम् सुन्दरम् एक नारा चला आ रहा है। जो मूर्तरूप धारण करेगा। शिव अवतारी बाबा गंगाईनाथ जी के ऊपर।
१३. रहस्यवादियों का समय प्रारम्भ हो चुका है। सारा ज्ञान विज्ञान मानव के अन्दर से प्रकट होगा। मानव का संचालक मानव के भीतर से प्रकट होगा। सहस्त्रार कला मूर्तरूप लेगी। सहस्त्रार कला विश्व संचालन कला।
१४. मानवीय भेदभाव समाप्त किए जाएंगे। जाति-पाति, ऊंच-नीच, वर्ण, वंश आदि। एक मानव, एक भाषा, एक धर्म, एक झण्डा, एक विश्व की रूपरेखा का नया संविधान अस्तित्व में आएगा।
१५. शारीरिक क्षमताओं में उत्साहजनक अभिवृद्धि होगी। नया जोश, नयी उमंग, नयी ताकत मानवता में कल्कि अवतार द्वारा भर दी जाएगी। केवल अपने शिष्यों में। जिससे वे विषम परिस्थितियों में भी जीवित बच पाएंगे। काल कलवित लाशों के बीच।
१६. समय पालन, जीविकोपार्जन, गम्भीर मुदे बनकर उभरेंगे। एक बार तो घोर संकटों का सामना भी करना पड़ जाएगा जब तीसरा परमाणु विश्वयुद्ध चल रहा होगा उस समय। प्राण संकट सबसे बड़ी मुसीबत सामने आएगी।
१७. विश्व मानव कल्याण मूल प्रयोजन होगा।
१८. समाज सेवा, राष्ट्रसेवा, विश्वसेवा। तीन बड़ी सेवाओं हेतु कल्कि शिष्यों की भर्ती निकलेगी। कोई बेरोजगार नहीं मिलेगा। कल्कि शिष्य युवकों की कमी पड़ जाएगी।
१९. विस्तारित रूप भारत माला का विश्व माला नामकरण से बनाकर संगठित और सामूहिक प्रयास से विश्व धर्मयुद्ध को जीतना होगा।
२०. गोपियां सबका साथ निभाती रहेगी। उर्जा का आदान प्रदान आवश्यक रूप से पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ करते रहेंगे तो ही लम्बे समय तक इस मार्ग में टिके रह पाएंगे। अनावश्यक छेड़ छाड़ किसी के साथ न करें। दोनों तरफ हरी झण्डी मिलने के बाद ही आगे कदम बढ़ाया जाना चाहिए। योग्यतम के साथ।
२१. संस्कारवान सन्तानोत्पति मुख्य ध्येय रहेगा सतयुग में। अवैद्य सन्तानें जन्मने का कारण ही समाप्त हो जाएगा।
२२. परामर्श वैज्ञानिक विधि से अध्यात्म विज्ञान पूर्ण विज्ञान होने का विश्वस्तर पर किया जाएगा। फिर विश्व अपने लाभ के लिए अध्यात्म विज्ञान को स्वीकार करके अपनाएंगे। अतः दर्शन की जानकारी सटीक, संक्षिप्त, सार-गर्भित देनी है। मानवों का आन्तरिक उच्चतम विकास करके उनको आगे चलाना होगा। मानव अपनी खोज स्वयं करे। सतयुगी साहित्य पुष्टि करेगा। आस्था दृढ़ तथा बलवती होती जाएगी विश्व मानवता की।
२३. सार-गर्भितः- विश्व साहित्य जो सतयुगी साहित्य सृजित कराया गया है वह विश्व के ३३ प्रतिशत सकारात्मक सोच के मानवों को उपलब्ध कराने की पुख्ता व्यवस्था की जानी चाहिए। जिसमें गुरुदेव द्वारा लिखित पुस्तकें भी शामिल है। मा. तथा गुरूवर साहित्य ही शामिल करें।
२४. भविष्य की सारी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की कार्यवाहियां 'विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग' एन.जी.ओ. के माध्यम से की जानी चाहिए। ताकि कोई विफल नहीं कर सके मिशन को। जिसकी कमाण्ड नाथमत के हाथ में रहेगी आजीवन। एन.जी.ओ., कैलेण्डर, रसीद बुकें, वेबसाइट तत्काल तैयार हो।
२५. संध्याकालः- घोर कलयुग का अन्त समय आ चुका है। कलयुगी व्यवस्थाएं लड़खड़ाकर स्वतः ही ध्वस्त हो जाएगी। सतयुगी व्यवस्थाएं स्वतः ही बहाल होती जाएगी। जो युग परिवर्तन होगा।
२६. शान्तिकाल समाप्त, अशान्तिकाल प्रारम्भ। सन २०२२ तक ऐसा ही दौर चलता रहेगा। फिर विश्वमानवता ३३ प्रतिशत बचेगी। सबको एक ही चिन्ता होगी कि इस मानवता को कैसे भी करके जिन्दा रखा जावे। कल्कि से वचन ले लेंगे तथा काला व लाल सदा सदा के लिए समाप्त।
२७. नवीन सतयुगः- पूर्व निश्चित तथा पूर्व निर्धारित उसका समय प्रारम्भ हो चुका है। जिसका काल जनवरी २०२० से आगामी ७००० वर्षों तक रहेगा।
२८. सत्य, धारावी प्रवाह से चलेगा यह मिशन भविष्य में। कोई गुटबाजी, पक्षपात किसी तरह का वाद आगामी समय में इस मिशन में दखलंदाजी नहीं कर पाएगा। ऐसे लोगों को हटा दिया जाएगा। वापस नहीं लिया जाएगा। काम करने हेतु विश्व आ जाएगा। कार्यकर्ताओं की कोई कमी नहीं रहेगी। भारत माला तथा विश्वमाला को ही महत्व देना। यह अपनी नेटवर्क चेन होगी। पैसे लेकर इसमें शामिल करो। निशुल्क प्रवेश मत दो। कठोर अनुशासन तथा निज पर शासन के तहत चलना होगा। कैमरे सिद्धलोक के प्रभावी निरीक्षण हेतु लगे होंगे। वहां से किसी तरह की माफी

नहीं मिलती। यह जन्म तो खराब होगा ही अगला जन्म ओर खराब हो जाएगा। इसी चेतावनी के साथ मालाओं में प्रवेश दें।
२६. विश्व सौन्दर्यकरण अभियान चलेगा प्रकृति द्वारा। जिसका आनन्द महायोगी ले सकेंगे थकान उतारने हेतु। जो सतयुग के पर्यटक स्थल होंगे। जहां स्वस्थ मनोरंजन होगा वासना रहित। काम कलाएं कृष्ण-गोपियों वाली होगी ऐसे स्थलों पर। व्याभिचार नहीं होगा।
३०. रिहर्सलः- विश्व घटनाक्रमों का किया जा चुका है सिद्धलोक द्वारा। अब क्रियान्वितियां प्रारम्भ हो चुकी। सन २०२० के अन्त तक ३० क्रियान्वितियां हो चुकी होगी। मिशन ३० प्रतिशत सफल हो चुका होगा। कुल १०० क्रियान्वितियां वर्णित है। ''विश्व प्रसिद्ध भविष्यवाणियां - विश्व में धार्मिक क्रान्ति-६२'' में। पुस्तक सत्य प्रमाणित होगी। केवल तीन वर्षों में २०२०, २०२१, २०२२ में। यह कसौटि दी जा चुकी है। अन्तिम फैसला अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से होगा। फिर केवल अवतारवाद ही चलेगा विश्व में। तब तक समस्त आराधकों/साधकों को कमर कसकर तन, मन, धन से समर्पित होकर धर्मयुद्ध में डटना पड़ेगा।
३१. एक बार ३६ का आंकड़ा प्रमाणित होगा सरकारों तथा साधकों के बीच। यथास्थितिवादी परिवर्तन स्वीकार नहीं करेंगे। मगर प्रलय तथा तीसरे विश्वयुद्ध की ऊपर लटक रही तलवार के कारण सरकारें कुछ बिगाड़ नहीं पाएगी।
३२. सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों आमने-सामने आकर खड़े हो जायेंगे। नकारात्मक हमलावर रूख अख्तीयार करेंगे सकारात्मकों पर। मगर बीच में उनका कल्कि अवतार आ जाएगा। फलस्वरूप हमला लौटकर हमलावरों पर चला जाएगा। नकारात्मकों के हमलों से नकारात्मक ही मरेंगे। सकारात्मक एक किनारे सुरक्षित रहेंगे। झूठे आपस में लड़कर मरेंगे। इस प्रकार ६६ प्रतिशत नकारात्मक नहीं मानेंगे और अलग अलग कारणों से मौत के मुंह में चले जाएंगे। इस प्रकार धर्मयुद्ध विजेता होंगे ३३ प्रतिशत सकारात्मक लोग।
३३. फाईल चार्ज बैंक लोन के समय राजकीय नियम है। उसी तरह दक्षिणा के बिना मंत्र दीक्षा प्रभावी नहीं होती है। यह अध्यात्म का नियम है। तन, मन, धन से समर्पण कराकर गुरू अपने शिष्य को शरण में लेता है। दीक्षा के बाद समस्त जिम्मेदारी गुरू पर आ जाती है उस साधक की। आजीवन यह गुरू शिष्य सम्बन्ध बना रहता है। गुरू जन्म जन्मान्तरों का एक ही होता है। शिष्य के शरण में आने के बाद अपने शुद्ध भौतिक धन का १० प्रतिशत तथा १० प्रतिशत आध्यात्मिक धन गुरू के चरणों में आजीवन अर्पण करते रहना चाहिए। ये विधि का विधान है। भौतिक जगत की सरकारों में भी जी.एस.टी व अन्य टैक्स दिए जाते हैं। जो अध्यात्म विज्ञान से नकल करके लागू किए गए है।
३४. मानवता, संवेदनशीलता अहम् मुद्दे होंगे निकटकाल में। दूसरे शब्दों में चेतन, अतिचेतन साधक तथा आराधकों को रहना पड़ेगा। आलस्य तथा निद्रा का त्याग करके ठण्डे बस्ते में जाने का समय तथा मार्ग नहीं है। हाईएलर्ट का मार्ग है।
३५. संस्कारवान परिवारों तथा युवक युवतियों को रिश्तों में सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। न कि धनबल और जनबल को। धनबल तथा जनबल का समय समाप्त हो चुका है। समय के साथ आत्मबल को ही सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आत्मबल का युग होगा।
३६. परिवर्तन प्रकृति का नियम है।
३७. अवशेषकालः- अध्यात्म विज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जिसके अवशेषकाल में युगों-युगों का प्राचीनकाल का इतिहास, घटनाक्रम अर्थात् सबकुछ सुरक्षित रहता है भौतिक विज्ञान के पेन ड्राइव व सी.डी. की तरह। जो ब्लेकबोक्स की तरह सुरक्षित रहता है। जो कभी नष्ट नहीं हो सकता। जिस पर नियंत्रण भी अध्यात्म विज्ञान का ही रहता है। ईश्वर नियंत्रित वेद विज्ञान है। किसी युग में प्राचीनकाल के विकसित विज्ञान की जरूरत पड़ जाए तो अवशेषकाल से निकालकर मदद ली जा सकती है। वापस नवीन सभ्यता को विकसित किया जा सकता है। यह अध्यात्म विज्ञान कभी नष्ट नहीं हो सकता। हां भौतिक विज्ञान नष्ट हो सकता है।
३८. संतवाणी प्रभावी होकर उभरेगी। जिसका समय आ चुका है। यह संतवाणी का काल होगा।
३९. घर घर में भक्त प्रहलाद पैदा होंगे कल्कि अवतारकाल में। उन्हें सरकारें नहीं कुचल पाएगी और ना हीं मार सकेगी। ऐसा प्रभावी दर्शन कल्कि अवतार का उभरेगा। सब सहम् कर पीछे हट जायेंगे कल्कि शिष्यों पर अत्याचार करने से। डर के मारे इनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। इनका अवतार शक्तिशाली है। लोग डरने लग जाएंगे। पापियों का नाश होने लगेगा।
४०. हमें विश्व सहिष्णुता की विचारधारा रखते हुए सभी पीड़ितों, शोषितों, निम्न वर्ग तथा मध्यम वर्ग को गले लगाकर एक मंच पर संगठित करना है। यही हमारा नया इतिहास बनेगा। एक मानवता का। केवल मानव जाति।
४१. भौतिक विज्ञान की नेटवर्क प्रणालियांः- तीसरे विश्वयुद्ध के बाद भौतिक तथा अध्यात्म दोनों विज्ञानों का विकास चरम पर होगा। भौतिक विज्ञान की नेटवर्क प्रणाली को पुनः बहाल किया जाएगा। मानव दोनों ही विज्ञानों से मदद ले सकेंगे। प्रभावी अध्यात्म विज्ञान होगा। विश्व नेतृत्व अध्यात्म विज्ञान का होगा। भारत का अध्यात्म विज्ञान विश्व को मान्य होगा।

४२. मरकरी लाईट जिस प्रकार से सफेद दूधिया प्रकाश देती है उसी तरह दिव्य प्रकाश है। यह दिव्यप्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा भारत का। इसे रोकना पागलपन होगा पूरे विश्व में। इस दिव्यप्रकाश से संसार में ज्ञानरूपी प्रकाश फैलेगा। मानव से महामानव बनेंगे। मानव चेतन और अतिचेतन मानव होंगे। विश्व मानवता का दिव्य रूपान्तरण होगा इसी दिव्यप्रकाश से।

४३. क्षतिपूर्ति का प्रावधान किया जा चुका है विश्वनाथ की कमाण्ड में। जो मानवीय क्षति नहीं होनी चाहिये थी और किसी कारणों से हो गई उसकी क्षतिपूर्ति की जाएगी। जो विश्व आश्चर्य होंगे वेद विज्ञान के। ईसा मसीह ने भी चमत्कार किए थे मगर ये उनसे भी बढ़कर होंगे आजाद हिन्द भारत की धरती से। आजाद हिन्द तथा अखण्ड हिन्द समानार्थी शब्द है।

४४. अखण्ड भारत का क्षेत्रफल बहुत विशाल होगा जिसमें वर्तमान चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, नेपाल, बर्मा, ईरान, इराक तक शामिल होंगे। जो पुराने भारत का क्षेत्रफल था। वही वापस आएगा।

४५. चीन की दीवार टूट जाएगी हिमालय विखण्डन के भूकम्प के दौरान। फिर चीन का भू-भाग भारत के साथ मिलेगा। ऐसी पूर्वनिश्चित कहानी है गुरू रामलाल जी सियाग की। यही कहानी क्रियान्वित होगी।

४६. सामान्यतः एक सदी में एक ही विनाशकारी भूकम्प आता रहा था। मगर इस २१वीं सदी में प्रकृति का सन्तुलन बनाने के लिए तथा सृष्टि का लय कराने के लिए सबसे ज्यादा, सबसे उच्च तीव्रता वाले बहुद्देशीय भूकम्प आएंगे। जिनका उद्देश्य सृष्टि का लय भी होगा तो नवीन सृष्टि की संरचना का निर्माण भी होगा। भूमण्डल का नवीन सतयुग के अनुसार निर्धारण भी होगा। इसीलिए बहुद्देशीय भूकम्प आएंगे। हिमालय का विखण्डन भी होगा तो नवीन हिमालय की स्थापना की संरचना भी साथ होगी। जो केवल अध्यात्म विज्ञान का विषय है। भौतिक विज्ञान की दखलंदाजी बन्द हो जाएगी प्रकृति निर्धारित क्षेत्रों में।

४७. सहारा थार मरूस्थल पुनः हरा भरा होगा प्रकृति की कार्यवाही के कारण। सबसे उपयुक्त निवास स्थान होगा राजस्थान में। प्राकृतिक सौन्दर्यकरण हरा-भरा शान्त क्षेत्र बनेगा। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लोगों का क्षेत्र रहा यह आजतक। वहां के लोगों ने अभावों की जिन्दगी जी थी। उसकी भरपाई होगी कल्किकाल में। विवेकानन्द केन्द्र भी स्थापित होगा उस क्षेत्र में। कर्म भूमि रही थी।

४८. किंचित मात्र/लेशमात्र भी पछतावा नहीं होगा विश्व प्रलय होने से पीछे बची मानवता को। ऐसा स्वर्ण युग आएगा भारत का। जो कल्कि स्वर्णकाल कहलाएगा।

४९. भारती तिरस्कृत, उपेक्षित, पीड़ितों को मान सम्मान देगी। यथास्थान पदोन्नत करेगी। क्योंकि उनका कार्यकाल अब आया है। निम्नवर्ग तथा मध्यम वर्ग का उत्थान होकर रहेगा।

५०. पाश्चात्यकरण कुचला जा चुका है इस जैविक हमले से। भारतीयकरण का उत्थान प्रारम्भ हो चुका है। अब यह रूकने वाला नहीं है। सन २०२४ तक सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में भारतीयकरण नजर आएगा। जिसकी स्थाई नींव लगेगी। आगामी ७००० वर्षों तक केवल भारतीयकरण ही चलेगा।

५१. विश्व समानान्तर सरकारें आज तक चली थी। अब वे ध्वस्त हो जाएगी उथल पुथल तथा विश्वयुद्ध में। केवल अध्यात्म विज्ञान की सरकारें अस्तित्व में आएगी तथा स्थायित्व प्रदान करेगी विश्व में।

५२. संहारकाल और प्रचारकाल कल्कि अवतार का विश्व भूमण्डल पर साथ चलेंगे। ३३ प्रतिशत विश्वमानवता को अवतारवाद इस प्रचारकाल के दौरान संगठित करने में सफल रहेंगे। नया विश्व इन्हीं का होगा। परमेश्वर का राज्य पूरा विश्व।

५३. शांतीदूत/विश्वात्मा को अपना कार्य भारत के भौतिक जगत में अप्रैल आखिरी सप्ताह २०२० से जगजाहिर होकर सम्भालना पड़ जाएगा। छुपकर बैठने की समय सीमा समाप्त। विश्व का नेतृत्व करना पड़ेगा गुरू के सामिप्य तथा तस्वीर के सानिध्य में।

५४. सारे असन्तुष्टों को, रूठे हुओं को सिस्टम में लाकर एक ही मंच पर इकट्ठा करना होगा नाथमत की विशेष कृपा से। नाथमत की कमाण्ड में। गुटबाजी, भेदभाव सब भूला दिए जाएंगे। मानवता को बचाने के अभियान में संगठित हो जाओ। एक सबके लिए तथा सब एक के लिए। बाबा गंगाईनाथ जी का नारा बुलन्द होगा। सामूहिक एवं संगठित प्रयासों से ही सफलता सम्भव है।

५५. अमेरिका विज्ञान की विधि इस दर्शन की कमान सम्भालेगा। खूब प्रचार-प्रसार करेगा जून २०२० के बाद भारत तथा विश्व में। उन्हें सहायक की जरूरत थी, जो प्रमाणित होकर प्रकट हो गया। फिर अमेरिका पीछे नहीं हटेगा। खूब भौतिक धन देगा इस दर्शन के प्रचार प्रसार हेतु। उनका सहायक उन्हें मिलेगा। गुरूदेव पर बाइबल प्रमाणित होगी। उनके सपने साकार होंगे। अनुभूतियां प्रत्यक्ष परिणाम देगी। पूरा दर्शन प्रमाणित विज्ञान होगा।

५६. हिन्दू दर्शन मूर्तरूप लेगा इसलिए पूरा विश्व हिन्दू विश्व बनेगा।

५७. कल्कि अवतरण को भारत तथा विश्व आसानी से स्वीकार नहीं करेंगे। जहर की घूंट पीनी ही पड़ेगी। ओर कोई रास्ता नहीं बचेगा।

५८. सत्य पथ, नया पथ, विश्व पथ ये तो तय है। इसका कोई विकल्प नहीं होगा। किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा। दर्शन अन्दर से बाहर निकलेगा। रहस्यवादियों का मार्ग है। सतयुगी सृजित साहित्य जिसकी पुष्टि करेगा। जिससे विश्वास दृढ़ तथा आत्मबल बहाल होता रहेगा। केवल ईश्वरजनित ध्यान योग।
५९. सम्पूर्ण कलाओं का ईश्वर अपनी पूरी ताकत के साथ प्रयोग करके इस मिशन को आगामी केवल तीन सालों में सफल करेंगे। लम्बा खींचने वाला मामला अब नहीं रहा। २०२२ सबसे कठिनकाल होगा विश्व मानवता के लिए। मनुष्य मौत मांगेगे और मौत भी आगे भागेगी। ऐसा दौर चलेगा। विश्व की पूरी भौतिक मशीनरी विश्व मानवता के प्राण बचाने में जुटी होगी।
६०. कल्कि का सहारा लेकर उनके समझ में आ जाएगा कि केवल कल्कि ही प्राण बचाने में सक्षम ओर समर्थ है। कोई मतभेद नहीं, कोई दूसरा तीसरा नहीं केवल एकमात्र कल्कि अवतार।
६१. पूरा विश्व एकमत होकर संगठित और सामूहिक प्रयास करेगा कि अंतिम दौर में विश्व की ३३ प्रतिशत मानवता बच जाए। मुख्य नारा - विश्व एकमत।
६२. विश्व की सहस्त्रार यात्रा की क्रियान्विति का समय नववर्ष प्रतिपदा २०७७ से प्रारम्भ हो चुका है। जो केवल तीन वर्षों में पूर्ण हो चुकी होगी।
६३. रामायण काल राम का था। महाभारत काल श्रीकृष्ण और अर्जुन का था। भविष्यतकाल श्री कल्कि अवतार काल केवल रामलाल जी सियाग का कल्कि काल होगा।
६४. विश्व पटल पर प्राण बचाने हेतु प्रार्थना शुरू की जा चुकी है। यही प्रार्थना २०२२ तक जारी रहेगी विश्व मानवता की। तब अवतार की शक्ति विश्वमानवता में आत्मा उड़ेलकर उतरेगी। विश्वमानवता का दिव्य रूपान्तरण होगा। करूण पुकार ही एकमात्र रास्ता है। बहुत पहले लिखा जा चुका है हे यहूदियों अभी भी समय है करूण पुकार करो प्राण बचाने हेतु। वह समय आ चुका है।
६५. समय बड़ा बलवान होता है। जो परिवर्तनशील होता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। युग तथा काल के अनुसार। अब सन्धिकाल समाप्त हो चुका है। जो दो युगों के बीच सन्धि कराता है। अब प्रलयकाल प्रारम्भ हो चुका है। जो सतयुग की शुरूआत है। सूक्ष्मजगत में कलयुग समाप्त हो चुका है। सतयुग की शुरूआत हो चुकी है। सूक्ष्मजगत आगे चलता है तथा स्थूल जगत उसके पीछे चलता है। सारा रिहर्सल किया जा चुका है भौतिक जगत में क्रियान्वितियों का। अब विलम्ब नहीं होगा।
६६. आशावादियों अब तुम्हारा समय आ चुका है। लम्बे इंतजार तथा संघर्ष के बाद। अब दृढ़ निश्चय रखकर पूर्ण आत्मबल के साथ तीन वर्षों के लिए धर्मयुद्ध में कूद पड़ो। भविष्य तथा विश्व दोनों तुम्हारे होंगे।
६७. २७ तारीख विश्व मानवता के स्वर्णिमकाल की तारीख है।
६८. भारत का भविष्य अति उज्जवल अध्यात्म विज्ञान में।
६९. विश्व सृजन नये सिरे से।
७०. भूमण्डल को मध्य नजर रखते हुए विश्वनाथमत अपने कदम उठाता है और कार्यवाहियों को क्रियान्विति करते हैं। पश्चिम शोर-शराबा अवश्य करेगा मगर चलेगी भारत की ही। भारत का अध्यात्म विज्ञान सफल होकर रहेगा। पश्चिम अपने भौतिक विज्ञान के विकास तथा भौतिक धन का घमंड जरूर करेगा। जब पश्चिम की भौतिक विज्ञान की चिकित्सा विज्ञान की प्रयोगशाला में यह अध्यात्म विज्ञान परिणाम दे देंगे। तो वे सच्चे लोग अध्यात्म विज्ञान को स्वीकार करके अपने भौतिक धन का खजाना अध्यात्म विज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए खोल देंगे। उनका भौतिक धन तथा अपना अध्यात्म विज्ञान का धन मिलकर वैदिक मनोविज्ञान को विश्व दर्शन बनाएंगे। यह २१वीं सदी का मूलमंत्र होगा।
७१. वैश्वीकरण की दिशा में नये आयाम स्थापित होंगे। भौतिक विज्ञान के साथ साथ अध्यात्म विज्ञान के आधार पर। विशेष तौर पर हिन्दू दर्शन के आधार पर।
७२. सनातनियों तुम हमारा सबकुछ ले लो मगर तुम्हारे पास जो कुछ है वह हमको दे दो। ताकि हमें असीम शांति और अक्षय आनन्द की प्राप्ति हो। यही अक्षय आनन्द सच्चिदानन्द है। भारत इसका पुजारी है। यह वेदान्त योग दर्शन है।
७३. मूल साहित्य इस दर्शन के प्रचार प्रसार में आधार का काम करेगा। जो लिपिबद्ध होता है। उसे तोड़ा मरोड़ा नहीं जाना चाहिए। इसलिए साहित्य को कोपीराइट कराया जाना अनिवार्य है।
७४. पद और गोपनीयता की शपथ तथा उसकी पालना अध्यात्म विज्ञान में अनिवार्य है। कोई रहस्य समय से पूर्व उजागर नहीं होवे। समय से पूर्व रहस्य पर से पर्दा हटते ही उस कहानी के विफल होने की सम्भावनाएं बढ़ जाती है। जो ईश्वरीय कार्य में हस्तक्षेप माना जाता है। फिर उस साधक को ऐसी भविष्य की रहस्यपूर्ण बातें बताते नहीं। पदावनत कर दिया जाता है।
७५. इससे भी बड़ा खतरा योगी की तीन चौथाई शक्ति निकालकर सामने वाले में चली जाती है। सिद्धोजी वहीं रूक जाते हैं। अपने ऊपर कुछ नहीं लेना है। विश्व का तस्वीर से संचालन।

७६. सात वेदियां ृगायत्री आराधकों के शरीरों के भीतर हुआ करती है। उन वेदियों पर गायत्री मन्त्रोच्चारण द्वारा गुरुवर चरणों में यज्ञ आवश्यक रहेगा आजीवन तो ही वे वेदियां चेतन रहेगी। क्रियाशील रहेगी। गायत्री आराधक गायत्री यज्ञ करके ही जीवित बच पाएंगे। अन्यथा किसी पर दोषारोपण नहीं चलेगा। यह शरीररूपी ग्रन्थ को चेतन रखने का विधि विधान है। जो पूरे ब्रह्माण्ड पर लागू है।
७७. सत धारा, सत मार्ग द्वारा ही सत संसार में चलती आई है ओर चलती रहेगी।
७८. सांसारिक जीवन तथा महायोगियों की जीवन प्रणाली विरोधाभास है। महायोगियों की जीवन प्रणाली आजीवन ईश्वरोन्मुख रहेगी तथा सांसारिक मानवों की जीवन प्रणाली संसार की तरफ संसारोन्मुख रहेगी। दोनों की दिशाएं विपरीत है। परन्तु महायोगियों को अपनी जीवन प्रणाली किसी भी स्थिति में छोड़नी नहीं है। यही सफलता का मूलमंत्र है। अपना अपना पलड़ा भारी करने में सभी लगे हुए हैं। आगे भी लगे रहेंगे। दोनों पक्षों का अस्तित्व बना रहे। शक्ति सन्तुलन तथा पृथ्वी सन्तुलन बनाए रखना ईश्वरीय इच्छा होती है।
७९. महायोगियों के मार्ग में पंचायती विध्वंशात्मक प्रमाणित हुई है आज तक। शक्ति तथा भक्ति का बहुत विध्वंश किया श्राप और दुर्राशीष से। महायोगियों को सत्संग का सहारा लेना चाहिए। कभी पंचायती में नहीं पड़ना चाहिए।
८०. भौतिक विज्ञान के स्मार्टफोन को ५ जी सिम से कनैक्ट करके चार्ज तथा रिचार्ज करने पर सदैव एक्सचेंज से जुड़कर अस्तित्व में रहता है। उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान के मानव रूपी मोबाईल में ५जी की सिम डालकर चार्ज और रिचार्ज करते रहने पर मानव रूपी मोबाईल अध्यात्म विज्ञान के एक्सचेंज से जुड़कर अस्तित्व में रहेगा। चाहे कैसा भी प्रलय क्यों ना आ जाए? सहस्त्रार यात्रा पुस्तक इसी जानकारी के लिए प्रकाशित हुई है।
८१. सहस्त्रार सेवा नामक पुस्तक एक कदम इससे भी आगे बढ़कर अध्यात्म विज्ञान के एक्सचेंज की कार्यप्रणालियों तथा विभिन्न योजनाओं की विश्व मानवता को सरल भाषा में जानकारी उपलब्ध कराएगी। ईश्वर क्या है? ईश्वर कौन है? ईश्वर की कार्यप्रणाली पूरे विश्व में किस प्रकार कार्य करती है? विश्व मानवता यदि ईश्वर की कार्यप्रणाली में भागीदार बनकर विश्व मानवता की सेवा करना चाहती है तो क्या व्यवस्था है? सम्पूर्ण जानकारी सहस्त्रार सेवा में उपलब्ध है।
८२. मनोमय कोष तथा विज्ञानमय कोष से सत, चित, आनन्द इन पांचों कोषों के सम्पूर्ण चेतन होने तथा विकास करने में सहस्त्रार सेवा पुस्तक अहम् भूमिका निभाएगी। जो सच्चिदानन्द धन प्राप्त करना चाहता है विश्व मानव को मदद मिलेगी सहस्त्रार सेवा नामक पुस्तक से। सहस्त्रार यात्रा अन्नमय तथा प्राणमय कोष तक सीमित है।
८३. विश्व सतयुगी साहित्य बहुत मददगार प्रमाणित होगा प्रलयकाल से विश्वमानवता के ३३ प्रतिशत भाग को बचाने में तथा सतयुग में प्रवेश कराने में। जिसे अवशेषकाल से निकाला गया है।
८४. समुद्र मंथन करके उसमें से १३ रत्न निकाले गए थे उसी प्रकार इस संसार रूपी विश्व मानवता का मंथन करके एक रत्न सतयुगी साहित्य उपलब्ध कराया गया है।
८५. वेबसाईट 'विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग' स्वतंत्र रूप से भविष्य में विश्वस्तर पर काम करेगी। जो विश्व मानवता की मार्गदर्शक होगी। सम्पूर्ण जानकारी उसमें समाहित की जाएगी। 'विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग' वेबसाईट को तत्काल अस्तित्व में लाया जावे। अन्यथा इस मिशन को कुचल देंगी आसुरी शक्तियां।
८६. इस दर्शन का मुख्य आधार संवेदनशीलता, चेतन, अतिचेतन ही होगा। गुरू से जुड़ने के बाद समर्थ गुरू ही यह कार्य कर सकते हैं।
८७. काल निर्धारक महाशिव, सृष्टि रचियता महाशिव, सृष्टि संचालक महाशिव ने अपनी सारी शक्तियां सदगुरू को प्रदत करके संसार के उद्धार के लिए अवतरित किया था। गुरू मालिक बनकर बैठ गया। गुरू से संभला नहीं, तो पुनः महाशिव को प्रकट होना पड़ा। अवतार परशूराम जी से भी नहीं सम्भला तो राम का सहारा लेना पड़ा था। जिस प्रकार परशूराम जी ने भी अपनी शक्ति विध्वंश में लगाकर बहुत विनाश किया था इसी प्रकार गुरु सियाग ने भी क्रोध, बदला कार्यवाहियों में अपनी शक्ति तथा भक्ति को विध्वंश में लगाकर नष्ट कर लिया था। परशूराम जी की तरह ही राम का सहारा लेना पड़ेगा तो ये दर्शन विश्व दर्शन होगा। कहानी में विलम्ब हुआ मगर महाशिव कृपा से सफलता प्रदान की जाएगी।
८८. संहारकाल प्रारम्भ हो जाने के कारण ही कल्कि अवतार सफल हो पाएंगे। अन्यथा सन्देह था।
८९. विश्वस्तरीय कार्यवाहियों की क्रियान्वितियां प्रारम्भ की जा चुकी है। अब क्षेत्रीय मुद्दे नहीं है। हर घटना का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ेगा। इसी प्रकार की घटनाएं विश्वस्तरीय क्रम संख्या ३० तक पहुँचेगी इसी सन् २०७७ में। बाधाएं साफ हो जाएगी अवतारवाद की। फिर मिशन विश्व स्तर पर सरपट दौड़ेगा। कछुआ चाल नहीं रहेगी। केवल तीन वर्षों के लिए लग जाओ। अपने उद्देश्यों में सफल हो जाओगे। जो कल्किकाल होगा।
९०. छांयाकन पर कभी भरोसा मत करो। जो नींद के सपने। केवल खुली आंखों ध्यान पर विश्वास क्रियान्वितियां भौतिक आंखों से देखेंगे वही प्रमाणित सत्य होगा। केवल उन्हीं पर विश्वास करो। गुरुकृपा से अपनी जो स्टेज है उससे कभी नीचे मत उतरो। वही हालत हो जाएगी जैसे ५ जी की सिम वापस ३ जी नेटवर्क पर आ गई। नीचे उतरने पर आराधक / साधक को भी पहले की स्टेज जैसा आनन्द नहीं मिलेगा। नाम का नशा जारी रखें। चाबी नामजप है। सकारात्मक बने रहना आवश्यक है।

९१. विश्व मानव कल्याण अहम् मुद्दा है विश्वस्तर पर। यह परमार्थी कार्य भारत देश ही कर सकेगा। बाकी देश स्वार्थी है। उनके खाते में यह सौभाग्य नहीं जा सकता। यह सौभाग्य तो उसी देश को मिल सकता है जो परमार्थी विश्व मानव कल्याण का उद्देश्य लेकर निकले।
९२. विश्व में १७ शक्तिपात दीक्षा के ध्यान एवं सिद्धयोग के कार्यक्रम भारत राष्ट्र के महामहिम राष्ट्रपति अनुमोदित करेंगे। भौतिक जगत की सरकार के।
९३. सती अनुसूइया विश्व आश्चर्यों का पहला प्रमाणित सत्य होगा। जिससे भौतिक जगत सहम् जाएगा। ना निगल सकेंगे और न हीं उगल सकेंगे।
९४. सच्चे मानव सहायता समूह उभरेंगे प्रलयकाल में। जो कल्कि शिष्य होंगे।
९५. विश्वमानचित्र पुस्तक भारत के किसी राजनेता के हाथ नहीं लगनी चाहिए। न हीं सरकार के हाथ लगनी चाहिए।
९६. समय निर्धारण प्रत्येक क्रियान्विति का सिद्धलोक में किया जाकर आस पास का बताया जाएगा। सही समय प्रकृति अपने पास रखती है। हम किसी को सही समय बताने हेतु बाध्य नहीं हैं।
९७. राजकीय कार्य में बाधा का भौतिक जगत में मुकदमा दर्ज जोता है, सजा का प्रावधान है। उससे भी खतरनाक धाराएं अध्यात्म विज्ञान में किसी कार्य में बाधा डालने पर लगती है। जिसे अक्षम्य अपराध कहा जाता है। अक्षम्य अपराधियों को कोई नहीं बचा सकता है। बिना गवाह, बिना वकील, बिना फीस तत्काल फैसले होते हैं, अक्षम्य अपराधियों के सहस्त्रार कला से। अध्यात्म विज्ञान के कार्य में विलम्ब तथा कोताही बर्दाश्त नहीं होते हैं। जांच दल जांच करता है और धाराओं के अनुसार कठोर दण्ड देता है। सबकुछ सूक्ष्मजगत में।
९८. परमार्थ का कार्य सर्वोपरी परमात्मा के घर में। भौतिक जगत स्वार्थवश कार्य करता है। अध्यात्म जगत परमार्थ के लिए कार्य करता है।
९९. सायंकाल जिसे सन्ध्याकाल कहते हैं। एक होता है प्रातःकाल। दोनों विपरित है। प्रातःकाल में सूर्य उदय होता है तो सायंकाल में सूर्य अस्त होता है। अभी भौतिक जगत के लिए सन्ध्याकाल/सायंकाल है तथा अध्यात्म विज्ञान के लिए ऊषाकाल/प्रातःकाल है। एक जाएगा तथा दूसरा आएगा। कलयुग जाएगा तथा सतयुग आएगा।
१००. पुरूष और पुरूषार्थ दो शब्द है। एक कर्ता है दूसरी क्रिया है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। कर्ता की क्रियाएं यदि पुरूषों के हित में हो तो वे पुरूषार्थ बन जाते है। चार पुरूषार्थ बताए गए हैंः- धर्म, अर्थ, काम, तथा मोक्ष। वर्तमान स्थिति में उपरोक्त चारों पुरूषार्थ नहीं रहे। ये कामार्थ बन गए हैं। काम वासना सर्वोपरी है। पूरा संसार इसी के इर्द गिर्द घूमता है। मानव अपने मानव जीवन के मूल उद्देश्यों से भटक गया है। मानवता को सही रास्ते पर लाने के लिए अवतार का अवतरण हुआ है। यह अवतार मानव जीवन की दशा और दिशा बदल देंगे। इसलिए अवतार आते हैं। विश्व मानवता में एक नया विकास होगा और यह अन्तिम विकास होगा। आन्तरिक उच्चतम विकास से पूर्ण विकसित मानव बनाना ही हिन्दू धर्म है।
१०१. एजेन्डा एक शब्द है। हिन्दी में जिसे मदुदा कहते हैं। सतयुग की स्थापना मुख्य मदुदा है अवतार का। हिन्दी में विश्व रूपान्तरण।
१०२. पीताम्बर ३३ प्रतिशत के लिए बचाने की राह निकालेगा। पीताम्बर का बहुत कुछ कार्य किया जा चुका है। ९० प्रतिशत निपटारा हो चुका है। २०२० में बाकी बचा १० प्रतिशत निपटाना होगा काजलवास समाधियों से। फिर १०० प्रतिशत कार्य पीताम्बर का हो जाएगा।
१०३. हमें नई पुस्तक इस वायरस में नवीन जानकारियां दी जाएगी। इस वायरस को महावायरस की संज्ञा भी दी जा सकती है। इस वायरस में सम्मिलित कितने ही और भी अदृश्य वायरसों के कारण इसे महावायरस कहा है।
१०४. संग्रहण और सम्प्रेषण प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। सूचना केन्द्र मतबूत बनेंगे।
१०५.क्षेत्रवाद, जातिवाद, धर्मवाद नये समीकरण उभरेंगे विश्वयुद्ध के। हालात भयावह बनेंगे।
१०६.पश्चिम का भौतिक विज्ञान परास्त होगा।
१०७.नारायण कला तथा महानारायण कलाओं का सदुपयोग भारती के उत्थान हेतु किया जाएगा।
१०८.विश्व की भौतिक विज्ञान की चिकित्सा विज्ञान असाध्य बीमारियों का उपचार करने में असमर्थ पहले ही हो चुका है। भारतीय योगदर्शन पद्धति में कोई रोग कुण्डलिनी शक्ति के सामने असाध्य नहीं है। यह जब भौतिक विज्ञान की प्रयोगशाला में प्रमाणित हो जाएगा तो सम्पूर्ण विश्व भारत की तरफ पहले तो आशाभरी नजरों से देखेगा फिर आजमाएंगे। अध्यात्म विज्ञान का ध्यान एवं सिद्धयोग सम्पूर्ण रोग मुक्ति में पूर्ण सफल रहेगा। जो विश्व के लिए आश्चर्य होगा।
१०९.घटनाक्रम नाटकीय मोड़ लेंगे जिनकी कहानी गुप्त। केवल सृष्टि रचियता तथा संचालक को पता है। जो अध्यात्म विज्ञान की भविष्यवाणियों से ही समझी जा सकेगी।
११०.केवल अध्यात्म विज्ञान की पूर्वनिर्धारित तथा पूर्वनिश्चित कहानियां ही मूर्तरूप लेगी। जिसकी वहां तक पहुँच है, केवल वे ही सत्य से अवगत हो पाएंगे।

१११.विश्व स्वास्थ्य संगठन कुछ नहीं कर पा रहा है। केवल एक औपचारिकता पूरी करने वाली नाकाम संस्था प्रमाणित हो चुका है। जिसकी जगह भारतीय ध्यान एवं सिद्धयोग लेगा। WORLD MEDITATION AND SIDHYOG नामक NGO प्रकाश में आवेगा। विश्व स्तर पर उभरेगा। यह साधारण NGO नहीं है। भविष्यवाणियों के कलैण्डर तथा भावी रणनीति के कारण विश्व विख्यात होगा।
११२.वैतरणी पार लगेगी। गुरू की कहानियां सत्य प्रमाणित होगी। जिसके लिए नाथमत एवं विश्वनाथमत जवाबदेह है। उन्होंने ही गुरू को धरती पर उतारा था। नाथमत एवं विश्वनाथमत की प्रतिष्ठा का सवाल है अवतारवाद को सफल करना।
११३.सहायक नदियां समुद्र में मिलेगी जब सच्ची संस्था नेतृत्व करेगी नाथमत एवं विश्वनाथमत की कमाण्ड में। स्वतः साथ आ जाएंगे बिना किसी की गरज किए। सीधा रास्ता चुनो।
११४.प्राकृतिक उथल-पुथल मूल कारण रहेगा। जिसमें कोई मुकदमा भी नहीं बनता। अध्यात्म विज्ञान तक सीधी पहुँच है तभी ऐसी भविष्यवाणियां हुई है। प्रमाणित हो गया है कि प्रकृति भी परमेश्वर के आदेश से चलती है। जहां भौतिक विज्ञान की सरकारें असहाय, निरूतर हो जाएगी। अध्यात्म विज्ञान की शरण में आ जाएगी। अपना अस्तित्व बचाने के लिए। अध्यात्म विज्ञान की विश्व में सरकारें होगी। जिनका नेतृत्व अध्यात्म विज्ञान करेगा। यह भविष्य का मास्टर प्लान है।
११५.न्याय प्रणाली घोर कलयुगी कागज आधारित ध्वस्त की जाकर उसके स्थान पर मानव वचन आधारित स्थापित की जाएगी। अन्यायालय समाप्त किए जाएंगे। भौतिक जगत में क्रियान्वितियां सामने आएगी।
११६.कुए में भांग घुली हुई है धर्म के क्षेत्र में। उन कुओं को सदा-सदा के लिए ऊपर से बन्द कर दिया जाएगा। भांग युक्त पानी कोई नहीं पी सकेंगे। इन कुओं की जगह भारत में गंगानदी तथा राजस्थान में सरस्वती नदी का पानी ऊपर लाकर विश्व मानवता को पिलाया जाएगा। ताकि मानवता का स्वास्थ्य सही हो तथा सही रहे।
११७.राजस्थान नौ नदियों का प्रदेश बनेगा।
११८.एक परमसता/परमात्मा सहस्त्रार में विराजमान जिसके इर्द-गिर्द विश्व मानवता घुमेगी। यही विश्व होगा।
११९.माह अगस्त में देश, सनातन धर्म और सरकारें उलझेंगे। सनातन धर्म सतयुग की बात करेगा तो उससे कलयुगी धर्माचार्यों के अस्तित्व पर प्रश्नवाचक चिहन् लगेगा तो वे अन्तिम विरोध करेंगे। घोर कलयुगी सरकारें अपना अस्तित्व बचाने हेतु अवतारवाद को कुचलने का प्रयास करेंगे। दोनों यथास्थितिवादी ही बना रहना चाहेंगे। मगर अन्तिम विजय सत्य, धर्म, नीति, न्याय पर आधारित सनातन धर्म की होगी। अवतार का दूत विश्व सरकारों को चेतावनी देने में सफल रहेगा अगस्त २०२० में। प्रलय तथा तीसरा विश्वयुद्ध यथास्थितिवादियों के लिए खतरा प्रमाणित होगा।
१२०.पूर्ण ब्रह्मचर्य के साथ पति-पत्नी गायत्री आराधक बने वे ही गायत्री १०० में शामिल हो सकेंगे भविष्य में।
१२१.साहित्य-९२ प्रमाणित होगा। बी.बी.सी. अपने चैनल के मंच से उजागर करेगा। लेखक उजागर होगा। उसकी लिखावट उजागर होगी। छपने की तारीख उजागर होगी। भविष्यवांणी प्रमाणित होगी 'गजवाहे हिन्द' की। पत्र बोलेगा १० करोड़ मानवों को मारने का प्लान था मगर काम कम हुआ है। बचाव का रास्ता। अच्छे-अच्छे हिन्दु आबादी वाले शहरों की आबादी एक ही रात्रि में घट जाएगी 'गजवाहे हिन्द' मिशन के तहत। सत्य उजागर होगा। विश्व सरकारें बेखबर। भौतिक सरकारों की खुफियां एजेंसियां पूर्णतः विफल रहेगी। केवल अध्यात्म विज्ञान ही सत्य उजागर करेगा। निर्दोष बरी।
१२२.साहित्य में कितना दम होगा? जब भविष्यवाणियां इतनी सटीक है। एक बार अवश्य पढ़ना है। साथ ही साहित्य भी उजागर हो जाएगा।
१२३.उसके पश्चात् मानव के सर्वागींण विकास का दौर प्रारम्भ होगा ध्यान एवं सिद्धयोग के द्वारा। देश सुनेगा तथा अनुशरण करेगा विश्व गुरू की ध्यान एवं सिद्धयोग पद्धति का । साथ ही कल्कि अवतार उजागर होगा।
१२४.युद्ध भी तैयार खड़ा है। उचित अवसर मिलते ही भौतिक जगत में क्रियान्विति नजर आएगी। भारत सरकार झकझौरी जाएगी जैविक हमले, रासायनिक हमले, प्राकृतिक प्रकोप तथा पाक समर्थित आंतरिक आतंकवाद से। भारत सतरंगी चाल का शिकार होगा। जो ईश्वर का प्रतिशोध होगा। ईश्वर की घोर उपेक्षा का निराशाजनक परिणाम आंखों के सामने आएगा।
१२५.समय-सारिणी बनाकर क्रमवार संख्या निर्धारित करके शिव ताण्डव किया जाएगा। भौतिक जगत को आगे रखते हुए। भारत की आबादी ७५ करोड़ पर आने पर शिव विश्रान्ति लेंगे। उसके बाद अगला चरण प्रारम्भ होगा। प्रथम चरण में 'भारत सरकार समाप्त' हो जाएगी। द्वितीय चरण में विश्व सरकारें समाप्त की जाएगी। जिन्हें पहले झकझौरा जा चुका होगा। प्रथम चरण में धनबल तथा जनबल को समाप्त करके दूसरे चरण के दो मुख्य कार्य होंगे तीसरा विश्वयुद्ध तथा ब्रह्माण्ड भूकम्प।
१२६.तीसरा चरण विश्व में सतयुग प्रारम्भ का होगा। विश्व मानवता रूपान्तरण किया जाएगा। विश्व परमेश्वर का परिवार।
१२७.ये लिखावट किसी के भी हाथ लग जाए तो कोई चिन्ता नहीं करनी है। यह सतयुगी विधान है कल्कि अवतार का।

१२८.यह रहस्यवादियों का मार्ग है। इसमें लिखी सारी लिखावट अन्दर से बाहर आई है। इस लिखावट में किसी आतंकवादी का हाथ तथा साथ नहीं है। सहस्त्रार में विराजमान परमात्मा से आया तथा मानव शरीर में स्थित आत्मा ने लिपिबद्ध किया है। भविष्य का सतयुगी विधि विधान है।

१२९.हमें विश्व सरकारों को विश्वदूत के माध्यम से चेतावनी देकर भौतिक जगत में युग परिवर्तन करना है। ताकि अवतार को दोषी नहीं ठहराया जा सके। अवतार पापी नहीं है। अवतारवाद युग प्रवर्तक है। सुष्टि संचालक तथा सृष्टि रचियता होता है। उसे अपनी कमाण्ड में कार्य करना ही होता है। अवतार आज तक विफल नहीं हुआ है।

१३०.पुस्तक ९२ पढ़कर सरकारों के रोंगटे खड़े होंगे। लेखक निर्दोष। लिखना मजबूरी थी। नौकरी से भी हाथ धोना पड़ा था। आर्थिक स्थिति दयनीय रही थी। अलग हटकर त्याग और तपस्या वाला धर्माचार्य है। पूर्व की सी.बी.आई. जांच पुष्टि करेगी। बेदाग चरित्रवान महान् आत्मा। लेखनी मानवीय बुद्धि से ऊपर की है। भविष्यवाणियां सटीक है। बाइज्जत बरी करेंगे। न्यायालय लगातार तथा रोजाना सुनवाई करेगा। वकील मा. स्वयं होगा। निर्णय परमात्मा करेंगे।

१३१.रावणवंशियों को रावण दहन की विधि जला-जलाकर भी मारा जाएगा केवल राजस्थान में। इसी तर्ज पर अमेरिका में भी। फिर राम का बिगूल राजस्थान में तथा अमेरिका में बजेगा कल्कि अवतार की छत्रछाया में। जून विदेश यात्रा सहायक आ चुका है पवित्र भारत की भूमि पर। उसे ढुढ़ो तथा शरण में आओ। जो सहायक को पहले स्वीकार करेंगे उन्हें सहायक विज्ञान की विधि अपने शरीर में परिणाम देंगे। अध्यात्म विज्ञान की कार्यप्रणली सिद्धयोग बाइबल मूर्तरूप लेगी रामलाल जी सियाग पर। उसके सामने इसाई झुकेंगे। सहायक प्रचारित होगा। अच्छी शुरूआत होगी। लगभग १ लाख लोग पहले चरण में ध्यान एवं सिद्धयोग से लाभान्वित होंगे। आगे भी शक्तिपात दीक्षा कार्यक्रम करने की जिज्ञासाएं तथा मांग बढ़ेगी। सिलसिला चल पड़ेगा तथा निर्णायक फैसला आएगा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से। फिर विश्व मंच से दर्शन की विस्तार से जानकारी अन्तिम परिणति होगी। वे ही आकर भारत में अपना कार्य उठा लेंगे।

१३२.न्यायाधीश इस सतयुगी विधान को जो तीनों कलों से जुड़ा है पूरा पढ़ेंगे। उनकी बुद्धि से ऊपर का मामला। लिखना भी आश्चर्यजनक है। बरी करने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं बचेगा।

१३३.सतधारा बह निकलेगी जोधपुर राजस्थान से, फिर राजधानी जयपुर, फिर नई दिल्ली भारत सरकार। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में सत्य प्रमाणित होकर अपने पूर्वनिर्धारित मुकाम पर पहुँचेगी। इसे रोकना पागलपन होगा। विश्व शान्ति की सूचक सतधारा प्रमाणित होगी। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय से सहायक घोषित होने के बाद ही विश्व में अमन, भाईचारा तथा शान्ति स्थापित हो पाएगी। यही तीनों धर्मों के अवतार का लक्ष्य/उद्देश्य होगा।

१३४.अमेरिका में तस्वीर से ध्यान एवं सिद्धयोग में कार्यप्रणली वही होगी सूक्ष्म जगत में जो भारत में रही थी। अन्तर केवल इतना होगा कि यहां ३ जी सिम कार्यरत थी तथा वहां ५$^{जी}$ सिम कार्यरत होगी। आशाजनक परिणाम मिलेंगे सजीव मानवों में विज्ञान की विधि।

१३५.विश्वदूत को अपने गुरूओं तथा नाथमत के साथ एक पतिव्रता नारी की भांति सम्बन्ध रखकर अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करना होगा। एकाकार रहकर ही सफलता सम्भव है। बीच में दरार का कोई स्थान नहीं है। पूरी गायत्री टीम पर भी यही नियम प्रभावी रहेंगे। गायत्री शक्तिपीठ सलग्न....

१३६.सहजयोग भारत का विश्व में प्रचारित होगा। इसमें किसी प्रकार का हठ नहीं चलता है। विश्व के समीकरण तथा परिस्थितियां गुरू अनुकुल बनाकर यह सिद्धयोग सहज में करा दिया जाता है। इसी कारण इसका नाम सहजयोग भी रखा गया है।

१३७.जो कभी सुनते नहीं थे उनकी ऐसी परिस्थितियां बनाकर प्राण रक्षा के लिए सुनने हेतु बाध्य कर दिया जाता है। विश्व गुरू की गुरू शक्तियां असीमित होती है। पूरा भूमण्डल विश्वगुरू की इच्छा मात्र से संचालित होने लगता है। विश्वगुरू की इच्छा शक्ति ही आदेश होता है।

१३८.''मानव सहायता समूह'' विश्व स्तर पर उभरेगा। यह एक बड़ा विभाग होगा। जो विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग से संचालित होगा।

१३९.महाशिव अपनी कमाण्ड में ''विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग'' NGO के माध्यम से इसे विश्व दर्शन बनाएंगे। यह वचनबद्धता है महाशिव की।

१४०.आखिरी बातः-इस मिशन को नकारात्मक शक्तियों के चंगुल से निकालकर पूर्ण संरक्षण प्रदान करके महाशिव की कमाण्ड में विश्व दर्शन घोषित कराया जाएगा।

१४१.जो साहित्य सृजित हुआ उसकी हम पुष्टि करते हैं। १०० प्रतिशत पूर्ण साहित्य है। साहित्य को विश्व मानवता को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। यह अन्तिम आदेश है।

१४२.कोई कुछ भी कहे, सांसारिक लोगों से कभी विचलित मत होना। केवल नाथमत का आदेश मानना। सफलता की वचनबद्धता तथा आशीर्वाद।

१४३.गुरूकुल पाठशालाओं की स्थापना का समय पुनः आ रहा है। पहला गुरूकुल विधालय पंचमथा पहाड़ी के नीचे प्रारम्भ होने वाला है।

१४४.गंगासागर विनाश का विस्तार से वर्णनः–हिमालय विखण्डन के मध्य में हिमगंगे विखण्डन भी छिपा है। जो जल प्लावन करेगा। जहां से गंगा की उत्पति हुई थी यह भूमिगत जल भण्डारण विप्लव करेगा। अथाह सागर उफनेगा तथा जल प्रलय लाएगा। किसी को अन्दाजा नहीं है कि वहां कितना पानी भूमिगत जमा है जिसके प्लावन से गंगानदी के मुंहाने फटेंगे। आसपास की बस्तियां डूब जाएगी अथवा जल प्रवाह के साथ बह जाएगी। नई सृष्टि की संरचना बनेगी। उतर भारत का भूगोल बदल जाएगा। यथास्थितिवादी, कर्मकाण्डी, पाखण्डी कई उसमें बह जाएंगे अथवा विनाश को प्राप्त होंगे। बड़ा बदलाव होगा।
१४५.विश्व की ३३ प्रतिशत मानवता तक सृजित सतयुगी साहित्य पहुँचा दो। अपना उद्देश्य पूरा तथा कार्य सफल होगा।
१४६.भाषा रूपान्तरण भी करना पड़ेगा तभी विदेशियों के समझ में आएगा साहित्य।
१४७.विनाशकाले विपरिते बुद्धि वाली कहावत चरितार्थ होगी। किसी के कुछ भी समझ में नहीं आएगा यथास्थितिवादियों के।
१४८.कहानीकार कल्कि अवतार तथा उनके अनुयायी सबकुछ ध्यानावस्था में तथा अन्तः प्रेरणाओं से समझते जाएंगे।
१४९.२१ वीं सदी सबसे महाविनाशकारी घोषित होगी आज तक की। ऐसे प्रलय पहले कभी नहीं हुए। घातक, विश्वव्यापी महाविनाशक प्रलयकाल प्रमाणित होगा।
१५०.संक्षेप में केवल तीन वर्ष अतिविनाशक।
१५१.महाभारत, गीता आदि की सारी कहानियां छोटी पड़ जाएगी। बाईबल के चमत्कार भी छोटे पड़ जाएंगे। पूरे विश्व की बची मानवता को एक धागे में पिरोया जाएगा। जाति, धर्म, देश की सीमाओं को तोड़कर अल्पकाल में। यही सबसे बड़ा विश्व आश्चर्य होगा।
१५२.अब ढूलमुल नीति का समय नहीं है। आर या पार का धर्मयुद्ध है। विपक्ष को तीनों लोकों और नो खण्डों से नेस्तनाबूद करने का आदेश है।
१५३.विश्व की मानवता असहाय। इस समय विश्व लोक डाऊन की अवस्था में कोई कुछ भी नहीं कर पा रहा है। कहां गए तथा क्या हुआ भौतिक जगत के देवी–देवताओं का, मन्दिरों का, मस्जिदों का, चर्चों का, गुरूद्वारों का, तेरापंथियों का? विश्व के सब ठप्प किए गए अगली कार्यवाहियों की क्रियानिवितियों हेतु। जैसे भारत ने १९९५ में अमेरिका नेटवर्क ३ मिनट के लिए ठप्प करके पोकरण परमाणु विस्फोट किया था। उसी प्रकार अध्यात्म विज्ञान में अप्रैल से ठप्प किया गया। सबके आगे प्रश्नवाचक चिहन लग गया? अस्तित्व पर प्रश्नवाचक चिहन लग गया? जो घोर कलयुग में संसार के संचालक थे।
एक बहुत छोटे सूक्ष्म जीव ने ऐसा कर दिया अथवा इसके पीछे अवतारवाद का हाथ था यह तो दूत ही विश्व देशों को चेतावनी देगा उसमें बताएगा। तब सरकारों के होश उड़ेंगे। अपनी अज्ञानता पर पश्चाताप होगा। गलतियों का अहसास होगा। घमण्ड चकनाचूर होगा। सत्य प्रमाणित तथा उजागर होगा। असली कवायद पर्दे के पीछे कुछ ओर है। जो अप्रैल आखिरी सप्ताह में सामने आ जाएगी।
१५४.रामावतार भी इस काल में अपना काम करेगा। उसका विश्वव्यापी कार्यकाल है।
१५५.सुगम उपायः–सहस्त्रार कला ध्यान की विधि से। इस मानव शरीर से बाहर कहीं भी कुछ नहीं है। मानव शरीर सबसे बड़ा मन्दिर है। इसे चेतन करो ध्यान एवं सिद्धयोग द्वारा।
१५६.विश्व संरचनात्मक द्रव्य जो भौतिक मुद्रा है। जिससे विश्व संचालित हो रहा है। यह एक ऐसी बीमारी है जो जीवित मानवों को खा जाती है। इसके वशीभूत होकर मानव अपनी आत्मा को मार देता है घटिया कर्म करके। इसके लोभ और लालच की कोई सीमा नहीं है। कोई भी मानव इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ। इसकी जड़ को ही विष्णु खींचकर अपने अधीन कर लेंगे। सारा संसार सुधर जाएगा। विष्णु जीवित मानवों का भरण–पोषण करता है। इसलिए कोई भूखा नहीं सोएगा।
१५७.भारत में बाढ़ें आ सकती है। असंख्य मौतें हो सकती है। प्रकृति बड़ी करवट ले सकती है। हिमालय विखण्डन अर्थात् उतर भारत झाड़ू–पौछा कभी भी लग सकता है। जिसमें करोड़ों लाशें पानी के साथ बह जाएगी। उतर भारत का सम्पूर्ण नक्शा ही बदल जाएगा। उतरी ग्रिड ठप्प। देश अंधेरे में डूबेगा। करोड़ों टन खाधान्न सड़ान्ध मारेगा। भारत का ५० प्रतिशत खाधान्न नष्ट हो जाएगा। त्रासदी से विश्व सरकारें तबाह और बर्बाद हो जाएगी। हिमालय विखण्डन के बाद देश रूक सा जाएगा। भारत की १८ करोड़ आबादी एक ही झटके में साफ हो जाएगी। कोई दोषी और गुनाहगार नहीं होगा। प्रकृति ने कर दिया है।
१५८.आखातीज कालीरात से मनाई जाएगी। ''अमावश की रात काली'' हेडिंग जगजाहिर होगा। भारत सरकार और विश्व सरकारें सकते में आ जाएगी। विश्व मानवता सहम् जाएगी। इस भविष्यवक्ता का कोई मुकाबला नहीं है। विश्व भूकम्प की तैयारियां अन्तिम चरण में आ चुकी है। प्रकृति का बड़ा फैसला जो भारत सरकार की रीढ़ की हड्डी तोड़ देगा।
१५९.सागर के नाम वाला धर्म विश्व धर्म होगा। विश्व पर तुला राशि राज करेगी। वह समय आ गया है।

१६०.पहाड़ साफ, गगनचुम्बी इमारतें मलबे में तब्दील होने वाली है। भूकम्प की रिक्टर पैमाने पर तीव्रता ११.०० मापी जाएगी। विश्व सरकारें धराशायी होगी। धनबल तथा जनबल नेस्तनाबूद। नई सभ्यता नये सिरे से जमेगी। नवीन सतयुग की शुरूआत।
१६१.अंग्रजों द्वारा दिए जाने वाले पश्चिम के जहर की समय सीमा समाप्त हो चुकी है। भारतीय आयुर्वेद तथा भारतीय ध्यान एवं सिद्धयोग का समय प्रारम्भ होगा।
१६२.श्वेताम्बर का समय शुरू हुआ। श्वेत दिव्य प्रकाश विश्व प्रकाश होगा।
१६३.जो दिव्य प्रकाश अरविन्द के साहित्य लालकमल के अनुसार २४ नवंबर २०१६ को कृष्ण अवतरण में उतरा था वही दिव्यप्रकाश विश्व मानवता में उतरेगा। आगामी समय श्वेत दिव्य प्रकाशकाल होगा।
१६४.मारण मंत्र अभी सक्रीय रहेगा विश्व स्तर पर। उसका प्रहर है। यह तीसरा प्रहर है बाईबल की भविष्यवांणियों के अनुसार।
१६५.विधुत चुम्बकीय भूमिगत प्लेटें खिसक गई है। अब ये महाविनाश करेगी। भूगर्भ हलचल अतिसंवेदनशील अवस्था में पहुँच चुकी है। घातक दुष्परिणाम। अतिशीघ्र हिमालय विखण्डन की क्रियान्विति होकर रहेगी। जिसकी उल्टी गिनती प्रारम्भ हो गई है।
१६६.भीषण आपदा प्रकृति की घटित होगी। उसमें अवसरवादी पाक आतंकवादी प्रधानमंत्री ईमरान की हत्या करके परमाणु शस्त्र अपने कब्जे में लेकर भारत पर मिसाईल हमला करेंगे। एक स्कड मिसाईल ऐसा विस्फोट करेगी कि बारूदी भण्डार जो. राजस्थान का सुलग उठेगा। संयोग देखो उस बारूदी भण्डार से पो. बारूद भण्डार सुलग उठेगा। जे. तथा पो. बारूदी भण्डारों से राजस्थान अग्निकाण्ड अप्रैल आखिरी सप्ताह में। जिसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। अध्यात्म विज्ञान की पकड़ में दुर्घटना आ गई। नपे तुले मर्यादित शब्दों में पद तथा गोपनीयता की शपथ का पालन करते हुए पहले सम्बन्धित राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री तथा बाद में जनता को समय रहते चेता दिया था। लापरवाह सरकार तथा लापरवाह राजस्थान की जनता ने कोई ध्यान नहीं दिया इसलिए खामियाजा भूगता। इसमें यह आत्मा जो लेखक कतई दोषी नहीं। एलर्ट तो भौतिक जगत की खुफिया एजेंसियां भी जारी करती है। वे तो दोषी नहीं होती है। क्योंकि उद्देश्य जनहित होता है। इसमें भी उद्देश्य जनहित ही था। इस आत्मा का आतंकवाद से कोई सम्बन्ध नहीं है। आतंकवाद से सम्बन्ध होता तो उजागर ही क्यों करता? प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं है।
१६७.झूठों का सफाया तथा सच्चों का उद्धार अवतारवाद का उद्देश्य है।
१६८.भौतिक जगत में उलझ जाने के कारण गायत्री क्षींण होकर समाप्त हो जाती है। फिर कोई अपना गायत्री यज्ञ भाग दे तो ही पुनः गायत्री बहाल हो सकती है। गायत्री आराधक के गिर जाने पर उसे पुनः खड़ा करने की बजाय नया आराधक तैयार करना आसान होता है। गिरे हुए को खड़ा करना बहुत कठिन अथवा यों कहना सही है कि असम्भव है। पतन में पहुँचा गायत्री आराधक स्वैच्छा से हाईपावर की पिन से जुड़कर ही वापस खड़ा हो सकता है।
१६९.गायत्री किसी पर भी थोपी नहीं जा सकती है। हां, यह बात सत्य है कि गुरू भौतिक जगत तथा अध्यात्म जगत में परिस्थितियां बनाकर गायत्री आराधक से गायत्री आराधना कराने में पूर्ण सक्षम और समर्थ होते हैं। बाद में जिसको जरूरत होगी वे गायत्री यज्ञ करेंगे। जिनको जरूरत नहीं होगी वे गायत्री यज्ञ नहीं करेंगे। गायत्री किसी की गरज का विषय नहीं है। सामने जाकर किसी को गायत्री यज्ञ का बोला जाने पर धर्म मर्यादा के अनुसार आंण होती है। गायत्री यज्ञ इतना सस्ता नहीं है कि किसी के पीछे फेंका जावे। जो आराधक श्रद्धाभाव से घर आकर तीन बार प्रार्थना करे और तन, मन, धन से समर्पण कर दे उसके घर जाकर गायत्री यज्ञ किया जाना चाहिए। वहां यज्ञ सफल भी हो जाता है। ऐसे आराधकों को जो जब तक कर्म बन्धनों में बन्धे रहते हैं अपनी शुद्ध आय का १० प्रतिशत भौतिक धन तथा १० प्रतिशत आध्यात्मिक धन गुरूवर चरणों में अर्पण करते रहना चाहिए। ताकि गायत्री का विस्तार होता रहे। कर्मबन्धनों से मुक्त जोड़ा जो गायत्री यज्ञ करता है वह दक्षिणा का अधिकारी होता है। ऐसे पूर्ण पुरूषों की भोजन व्यवस्था दक्षिणा से ही चलती है। आजीवन कर्मबन्धनों से मुक्त होकर बैठना पड़ता है। गायत्री यज्ञकर्ता क्रोध अथवा आवेश में आकर किसी को श्राप अथवा दुर्राशीष नहीं दे। ऐसा करने पर वह दागी हो जाता है। ईच्छा शक्ति से गायत्री चलती है। गायत्री आराधक पूर्ण पुरूषों को आजीवन अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना अनिवार्य है जो दूसरों को साथ बैठाकर गायत्री यज्ञ करते हैं। पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन की परीक्षाएं सूक्ष्म शरीर से तथा बाद में स्थूल शरीर से समय-समय पर पास करनी पड़ती रहती है। जो सहस्त्रार में विराजमान स्वयं परमात्मा लेते हैं। इस मार्ग में कल्पना अथवा भ्रम का कोई स्थान नहीं है। गायत्री शक्ति को कभी विध्वंश में नहीं लगाना चाहिए। गुरू सियाग ने गुस्से तथा बदला कार्यवाहियों में गायत्री का बहुत विध्वंश किया था। अतः नाथमत को अपनी पावर वापस खींचनी पड़ी थी। फलस्वरूप गुरू कमजोर हो गए थे। अपना कार्य निश्चित समय पर नहीं कर पाए थे। विलम्ब हुआ। फिर नाथमत ने कमाण्ड अपने हाथ में लेकर इस मिशन को सफल किया था। गायत्री में पूर्ण पुरूष ही सफल हो सकते हैं। के.ए.पी.पी. पर पंचायतीयां करके, जननेताओं के प्रचार कार्य में, घर पर कर्म बन्धनों में फंसे रहकर, भौतिक जगत में लिप्त होकर गायत्री का बहुत विध्वंश किया था। जिसकी भरपाई असम्भव है। अब नाथमत भी वहां से पीछे हट चुका है। जिन्होंने भी गायत्री को क्षींण करके समाप्त कर लिया उन्हें यदि गायत्री बहाल करनी है, जिसको भरपाई चाहिए वे काजलवास आएं।

१७०.सरकारों तथा बैंको के सामने ऐसा अर्थ संकट आएगा जैसा आज तक कभी नहीं आया था। केवल किसान उससे बच पाएंगे जिनके घर पर खाधान्न सुरक्षित है। विश्व में खाधान्न संकट पैदा होगा। भौतिक जगत की सरकारें आंखों पर पट्टी बांधकर चल रही है। कितना बड़ा खाधान्न संकट है इसका इनको अंदाज नहीं है। दाने-दाने को मोहताज होंगे। फिर ये किसानों की रणनीति बदलेंगे। बहुत गम्भीर विषय है। एक तरफ तो जल प्लावन में जमीन डूब जाएगी, खाधान्न सड़ान्ध मारेगा हिमालय विखण्डन के दौरान ५० प्रतिशत नष्ट होकर। तीसरा अर्थ संकट। चौथा सरकारें तथा बैंके दिवालिया हो जाएगी। पांचवां विश्वयुद्ध की तलवार सिर पर लटकेगी। क्या-क्या करोगे? भूख सामने खड़ी होगी।

१७१.साझा प्रयास सफलता का मूलमंत्र है। संगठित एवं सामूहिक प्रयास अध्यात्म विज्ञान में विश्व संगठन बनकर उभरेगा।

१७२.भाखर/पर्वतमाला अरावली ऐतिहासिक नगरी का रूप लेगी राजस्थान में। नया विश्व यहां से सृजित तथा संचालित होगा। मूल शक्ति यहां आ चुकी है। यहां ज्ञान का खजाना है। जो कार्य संग्रीला घाटी से पूर्व कालों में हो चुका है वही कार्य भविष्यतकाल में राजस्थान की अरावली पर्वतमाला से गुप्तरूप से सम्पादित होकर रहेगा। सूक्ष्म जगत में ऐसी व्यवस्थाएं की जा चुकी है। सशक्त अरावली पर्वतमाला राजस्थान भूमि।

१७३.नाथमत को रोकना विश्व के लिए पागलपन होगा। गुरूवर ने कहा था कि एशिया महाद्वीप में अवतार को रोकना पागलपन होगा। हम इससे एक कदम आगे बढ़कर कह रहे हैं, ब्रह्माण्ड में नाथमत को रोकना पागलपन होगा। यह रूकेगा नहीं। सर्व सिद्ध नाथमत है। यह 'विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग' है।

१७४.पवन पुत्र हनुमान जो पवन वेग से यात्राएं करते थे। ऐसी यात्राएं पुनः प्रारम्भ होगी कर्मों और भाग्य के अनुसार। सार्वजनिक यातायात नहीं होगा।

१७५.सती सावित्री जो पूर्व में थी उसकी जगह पर नई नियुक्ति की गई है। पूरानी कहानी विफल होने के कारण। वो चमत्कार करेगी। मृत सर्जीवण होंगे।

१७६.भूमिगत केबल बिछाकर विधुत विभाग तथा दूर संचार विभाग पावर सप्लाई करता है। उसी भांति अध्यात्म विज्ञान में भी शक्ति संग्रहण, वितरण गुप्तरूप से प्राकृतिक गुफाओं द्वारा करता है ताकि किसी तरह की चोरी ना होवे, गुप्त रहस्य उजागर ना होवे। भूमिगत दिव्य प्रकाश संग्रहण तथा संप्रेषण प्रभावी रूप से कार्य कर सके। इसलिए कहा जाता है, यह चेतन भूमि है अथवा कहते हैं कि यह तपो भूमि है। जिस पर तपस्वी तपस्या करते हैं। वहां चिती कण भी गिरते हैं। जिनका प्रभाव युगों-युगों तक रहता है। अध्यात्म विज्ञान का नेटवर्क ऐसी चेतन भूमि से चलता रहता है। ये शक्ति केन्द्र होते हैं। उस वातावरण में भी दिव्य प्रकाश घनीभूतरूप में रहता है।

१७७.हमें अवतारों की चेतन भारत भूमि को ऐसा चेतन शक्ति केन्द्र बनाना है जहां से दिव्य प्रकाश की अध्यात्म विज्ञान की किरणों से विश्व और ब्रह्माण्ड संचालित होता रहे आगामी ७००० वर्षों तक। विश्व को सकारात्मक उर्जा तथा सकारात्मक मार्गदर्शन मिलता रहे। यही विश्व गुरू भारत की सार्थकता होगी। ऐसा सुअवसर पुनः चेतन भारत भूमि को मिला है २१ वीं सदी में। यह किसी अकेले पुरूष का कार्य नहीं है। यह सकारात्मक सोच के ३३ प्रतिशत मानवों का सामूहिक उतरदायित्व है। इसी कारण यहां से पुस्तक सहस्त्रार यात्रा तथा सहस्त्रार सेवा प्रकाशित हुई है। जिसमें ईश्वर का कार्य वर्णित है। पूरा भूमण्डल विश्व गुरू भारत के इर्द-गिर्द घुमेगा आगामी ७००० वर्षों तक आशाभरी किरणों के साथ। भारत उसका सकारात्मक प्रत्युतर देगा।

१७८.राजनैतिक संरक्षण प्राप्त व्यक्ति का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। उसी प्रकार नाथमत संरक्षण प्राप्त व्यक्ति भी पूर्णतः सुरक्षित रहेंगे भौतिक तथा अध्यात्म जगत में । यह सशक्त सिद्धयोग के लिए अनिवार्य हो चुका है। अस्तित्व बचाने के लिए अनिवार्य हो चुका है। बाकी कोई विद्वैष की भावना नहीं है किसी के प्रति।

१७९.भौतिक जगत की चक्की में जैसे गेहूं पीसे जाते हैं वैसे पिसने वाला है भौतिक जगत। जिस प्रकार कपड़े का मेल निकालने के लिए धोकर निचौड़ा जाता है उसी प्रकार निचौड़ा जाएगा। किसी के कुछ भी समझ में नहीं आएगा।

१८०.राजकीय संरक्षण प्राप्त पूर्व के भौतिक जगत के लोग प्रलय में साफ हो जाएंगे। उन अवसरवादी लोगों ने राजसता का खून चुषा, सरकारों का अपनी सुविधाओं हेतु दुरूपयोग किया। उनका अन्त प्रलय में होगा। भौतिक जगत की सरकारें उन्हें मरने से नहीं बचा पाएगी। यह राजनैतिक शुद्धीकरण होगा।

१८१.अध्यात्म विज्ञान के अवतार के मार्ग में उतर तथा दक्षिण दो बड़ी बाधाएं है। उतर की एक बड़ी बाधा को हिमालय विखण्डन करके अप्रैल आखिर में हटाना सुनिश्चित किया जा चुका है। दूसरी दक्षिण की बाधा एक वर्ष बाद भीषण गर्मी ऋतु में हटाई जाएगी महाशिव कमाण्ड में।

१८२.भारत एक मददगार विश्व राष्ट्र के रूप में उभरेगा। यह मदद अध्यात्म विज्ञान के दान की होगी। भारत विश्व को अध्यात्म विज्ञान का ज्ञान दान करेगा। भारत की पहचान विशेषरूप से धर्म और अध्यात्म दर्शन के रूप में दानवीर की बनेगी। भारत का अध्यात्म दान विश्व मानवता के प्राण बचाएगा। विश्व को भारत के अध्यात्म दान से नया जीवन मिलेगा। यह उपकार विश्व कभी नहीं भूलेगा। भारत की शक्ति विश्व शक्ति बनकर उभरेगी। भारत की भक्ति विश्व प्रसिद्ध होगी। दान तीन तरह के होते हैं- विधादान, अध्यात्म का दान, प्राणदान। तीनों प्रकार के दान भारत विश्व को करके विश्वगुरू के पद पर पुनः सुशोभित होगा।

१८३.संसार में विश्व मानवों के बच्चों के पढ़ने हेतु विधालय तथा विश्वविधालय भौतिक धन से भौतिक संसाधनों से बनाए गए हैं। जहां अंग्रेजी तथा विभिन्न भाषाओं में शिक्षा दी गई है निरन्तरकाल से। जो विश्व मानवता को पश्चिमी सभ्यता की ओर ले गई। भौतिक विज्ञान का खूब विकास किया और अन्त में उसी विकसित भौतिक विज्ञान ने अपनी ही सन्तानों विश्व मानवता को मौत के मुंह में धकेल दिया है। खान-पान के कारण, पश्चिमी सोच के कारण, जैविक हमलों के कारण, अणु-परमाणु हमलों के कारण, रासायनिक हमलों के कारण अथवा प्रकृति को पाप का नाश करने हेतु कदम उठाना पड़ता है। उपरोक्त अनेक कारण बनेंगे। मानव द्वारा किए गए कुकृत्यों का नाश करना। विश्व मानवता ने प्रकृति के साथ पश्चिमी अन्धानुकरण के कारण खिलवाड़ किया और प्रकृति वापस बदला कार्यवाहियां शुरू कर चुकी है उसी मानवता को मारने हेतु।

अब आते हैं अध्यात्म विज्ञान के विधालयों तथा विश्वविधालयों की तरफ। मानव शरीर सबसे बड़ा मन्दिर है। उसी में अध्यात्म विज्ञान का सहस्त्रार में सबसे बड़ा एक्सचेंज है। उसी मानव शरीर के भीतर विधालय तथा विश्वविधालय है अध्यात्म विज्ञान के। उनका संचालक भी मानव के भीतर सहस्त्रार में बैठा है। कुछ योग्य और चुने हुए मानवों को भीतर बैठा सहस्त्रार संचालक अपनी विश्व कलाओं से बचा लेंगे। प्रलय के विभिन्न दौरों में भी। अध्यात्म विज्ञान के अनुसार मनुष्य शरीर में असीम ज्ञान और विज्ञान भरा पड़ा है। विश्व गुरू मानव की आन्तरिक शक्यिों को चेतन करके अपने अन्दर भरे पड़े ज्ञान-विज्ञान को काम में लेने का तरीका बता रहे हैं, और बताते रहेंगे। यह प्रक्रिया परा तथा अपरा दोनों विधाओं से जारी रहेगी। मनुष्य शरीर ईश्वर का ही स्वरूप है। अन्त में कहा कि वह ईश्वर है। 'विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग' एक क्रियात्मक पद्धति है। जो भारत की सनातन/हिन्दु धर्म की देन है। इस क्रियात्मक पद्धति से विश्व प्रलय में कुछ चुने हुए मानवों को जीवित बचा लिया जाएगा। जो लगभग ३३ प्रतिशत विश्व मानवता होगी। ये नेस्त्रोदमस तथा बाईबल में ईसा की भविष्यवांणियां है।

१८४.मानव शरीर में दो शक्ति केन्द्र होते हैं मूलाधार तथा सहस्त्रार। उपरोक्त प्रक्रिया सहस्त्रार संचालन से सम्भव हो पाएगी। किसी को अंधेरे में नहीं रखा जाएगा। सत्य पर आधारित ज्ञान प्रकट किया जा चुका है। प्रत्येक विश्व मानव स्वतंत्र है चाहे उस शक्ति केन्द्र से जुड़कर अपना जीवन यापन करे। यह दर्शन किसी मानव पर थोपा नहीं जा सकता है। यह एक स्वतंत्र और निष्पक्ष कार्यप्रणली है अध्यात्म विज्ञान की ईश्वर संचालित।

१८५.अतः हे विश्व मानवों अर्न्तमुखी होकर अपने टी.वी. तीसरे नेत्र की जगह पर अपने परमपिता परमेश्वर का ध्यान करो। जो तुम्हारे प्राण अन्दर से बचाएंगे। बाहर किसी से कोई उम्मीद मत रखो।

१८६.विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग का स्थाई पता झौंपड़ा वेदी मोरनावड़ा का डालना पड़ेगा। पलाना की तरह मोरनावड़ा विश्व विख्यात होगा नाथमत की कमाण्ड में। जन्म भूमियां कालान्तर में पूजी जाएगी।

१८७.विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग का राष्ट्रीय मुख्यालय भी देश की राजधानी नई दिल्ली में ५ बीघा भूमि में बनेगा। वहां से विश्व जुड़ेगा और संचालित होगा।

१८८.नाथद्वारा नवनिर्मित होकर पावनभूमि से विश्व संचालन आगामी पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहेगा। भव्य नगरी विकसित होगी। जिसका नामकरण 'नाथ नगरी' होगा। विश्व पटल पर चमकेगी। हवाई सेवा उपलब्ध होगी। पंचमथा विकास विश्व विख्यात होगा मगर गुप्त शरणस्थली महायोगियों की रहेगी। धो.स्टेशन गुप्त शरणस्थली महायोगियों की आजीवन रहेगी। वहां भी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध होगी। उसे विकसित किया जाएगा। उपरोक्त सारा नाथमत की कमाण्ड में।

१८९.विश्व लोक साहित्य की संज्ञा भी सतयुगी साहित्य को दी जा सकती है। लोगों की भावनाओं तथा भाषाओं की सुविधानुसार इसका विश्व भाषाओं में रूपान्तरण करना पड़ेगा। ३३ प्रतिशत विश्व मानवता को गुरू का साहित्य तथा मा. का साहित्य उपलब्ध कराना अनिवार्य है। यह गीता ज्ञान है।

१९०.मां भारती जो विप्लव करने वाली है। उसका खामियाजा बहुत गम्भीर होगा। आगामी १००० वर्षों तक जिसका प्रभाव रहेगा। याद करके रूंह कांप उठेगी। भारत भौतिक क्षेत्र में पिछड़ जाएगा। साथ ही सतयुगी नवनिर्माण भी होगा।

१९१.विश्वात्मा/विश्वदूत केवल बी.बी.सी. चैनल के मंच से विश्व सरकारों को चेतावनियां दे अवतारवाद की। दूसरा कोई चैनल स्वीकार नहीं करना है कभी भी और कहीं भी। धोखा हो सकता है। सावधानी आवश्यक है।

१९२.सूत्रधार कुछ विपक्ष के जिन्हें यह विश्व व्यापी प्रचार-प्रसार रास नहीं आएगा इस सनातन दर्शन का। वे असफल प्रयास तो करेंगे तथा उनका शुद्धीकरण होता जाएगा। कारण बनने पर शुद्धीकरण अवश्य होगा। रोड़े अटकाना उनका अधर्म है। जिससे किसी सनातनी को कभी भी विचलित होने की अब आवश्यकता नहीं है। अब सफलता के ही द्वार खुलेंगे। यह विश्व दर्शन होकर रहेगा नाथमत की मजबूत कमाण्ड में।

१९३.विराट् स्वरूप दर्शन केवल संकटकाल में ही होते हैं। अब संकटकाल, अशान्तीकाल प्रारम्भ हो चुका है पहली तिमाही २०२० से। सघन नामजप तथा गायत्री आराधकों द्वारा गायत्री यज्ञ विशेष मददगार होंगे। ताकि अध्यात्म विज्ञान का नेटवर्क घनीभूतरूप में उभरकर विश्वव्यापी विस्तार हो सके।

अध्यात्म विज्ञान के दिव्य प्रकाश के नेटवर्क से जरूरतमंद विश्व मानवता मदद लेकर अवतार से जुड़कर अपने प्राण बचा सकें। अध्यात्म विज्ञान/ईश्वर का नेटवर्क ऐसे संकटकाल में ही करूंण पुकार करने पर विस्तारित तथा विकसित

होता है। यह समय कर्मवीरों (कार्यकर्ताओं) तथा धर्मवीरों (आराधकों) के चेतन तथा अतिचेतन रहकर सघन आराधना का समय है। पुण्य आत्माओं द्वारा पुण्यदान का समय है। इस समय व सहयोग को विश्व मानवता सदैव स्मरण रखेगी आगामी पीढ़ियों तक। समय का पूर्ण सदुपयोग करें। भक्ति तथा शक्ति को भौतिक लाभ, समाज की कुरीतियों, कर्मकाण्डों, पाखण्डों, जन नेताओं के प्रचार-प्रसार में व्यर्थ खर्च नहीं करें। यह मंत्रजप तथा आराधना कीमती हीरेमोती है। इन्हें पंचायतियों में व्यर्थ ना गवाएं।

१६४.खेतेश्वर जो जन्म देते हैं ब्रह्मा का अवतार है। वर्तमान ब्रह्माजी के पदाधिकारी हैं। उनका वरदान है पृथ्वीं माता को कि पापियों का नाश होकर पृथ्वीं माता का भार हल्का होगा। यह कार्यवाही जैविक हमले से अभी चल रही है। इसका आंकड़ा ...करोड़ तक जाकर रूकेगा विश्व मानवता का। भारत का मृतक आंकड़ा जैविक हमले का ...करोड़ ...लाख पार कर जाएगा। ... २०२० से जैविक हमला पूरे विश्व से छः प्रकार के जैविकों को योगियों की योगाग्नि द्वारा जलाकर भस्म कर दिए जाने के कारण समाप्त हो जाएगा। उसी दिन से विश्व सनातन धर्म का अवतरण होगा। प्रमाणित हो जाएगा कि भारत में कल्कि अवतार हो चुका है।

१६५.सूक्ष्मजगत में आखिरी धर्मयुद्ध १०० प्रतिशत शुद्धीकरण के साथ एक बार पूर्ण सफल हुआ है। सूक्ष्मजगत विजेता सिद्धलोक सदैव के लिए।

१६६.कई कमजोर मानव आत्म हत्या करके जिन्दगी की जंग हार चुके हैं। यह जंग हारने की नहीं है। केवल जीतने की जंग है। आगे खतरे बहुत हैं। लोग मौत मांगेंगे और मौत आगे भागेगी। ऐसा समय भी आएगा। ऐसे में कल्कि अवतार चरण ही बचाएगा। दृढ़ आस्था, सघन मंत्रजप ही प्राण बचाएंगे।

१६७.केवल ४८ घण्टों में राजस्थान की मानवता जल जाती है तो यह सतयुग की शुरूआत समझ लेना।

१६८.जैसी करनी वैसी भरनी। पूर्व जन्म की कहानियों की सम्बन्धित आत्माओं के साथ पुनरावृति करेगी।

१६९.शरीर बाद में जन्म लेता है। उसके प्रारब्ध पहले निर्धारित होते हैं। प्रारब्ध कर्मोवश संघर्ष तथा भाग्य तय होता है। सद्कर्मों द्वारा प्रारब्ध को भी बदला जा सकता है गुरूवर कृपा से।

२००.मेल-मिलाप पूर्व जन्मों के संस्कारों के कारण ही होता है। सूक्ष्म जगत में सारी कहानियां पूर्व निर्धारित है। मास्टर प्लान बना हुआ है। दूसरे शब्दों में फिल्म बनी हुई है। केवल रिप्ले दिखाना है।

२०१.प्रमाणित सत्य सतयुगी विधान महाशिव की कमाण्ड में नववर्ष २०७७ से लागू किया जा चुका है। इस लेखन के लिए केवल मत्स्येंद्रनाथ जी जो योग के संस्थापक तथा संरक्षक सम्पूर्ण विश्व के हैं, जवाबदेह तथा जिम्मेदार हैं। रामनिवास सियाग केवल माध्यम होगा निकट भविष्य में। अतः इस लेखन के लिए लेखक रामनिवास सियाग को कभी दोषी नहीं ठहराया जा सकेगा तथा नहीं कभी दण्डित किया जा सकेगा।

२०२.ज्यों-ज्यों भौतिक जगत में क्रियान्वितियां होती जाएगी विश्व मानवता की भारतीय योग दर्शन के प्रति निष्ठा, आस्था दृढ़ होती जाएगी तथा अनुशरण होता जाएगा। क्रियात्मक परिणामों के आधार पर भारतीय योग दर्शन मूर्तरूप लेगा तो यह भारतीय की जगह पर विश्व योग दर्शन का स्थान ले लेगा। वेदान्त+योग अर्थात् प्रेक्टीकल। भौतिक विज्ञान की प्रयोगशालाओं में भारतीय योग दर्शन अपना परिणाम दे देगा तो विश्व इसे स्वीकार करेगा। अध्यात्म विज्ञान की कमाण्ड प्रमाणित हो जाएगी। भौतिक विज्ञान भी अध्यात्म विज्ञान के अधीन रह जाएगा। तब विश्व अध्यात्म विज्ञान को स्वीकार कर लेगा।

२०३.समीकरण देश, काल, परिस्थितियां आगामी समय में अध्यात्म विज्ञान के अधीन आ चुका है। सारे निर्णय तथा उनकी क्रियान्वितियां अध्यात्म विज्ञान की कमाण्ड में होगी तो भौतिक विज्ञान उसके सामने असहाय, बेबस प्रमाणित होगा। तब विश्व की मजबूरी हो जाएगी अध्यात्म विज्ञान की शरण में आकर अपने प्राण बचाना। अध्यात्म विज्ञान के संस्थापक एवं संरक्षक अपने विज्ञान के माध्यम से विश्व के कुछ चुने हुओं को प्राण दान देंगे। नया जीवन दान प्रदान करेंगे। ऐसे क्रान्तिकारी क्रियात्मक परिणाम सामने आएंगे। यह कथा प्रवचन का विज्ञान नहीं है। विश्व में सतयुगी शासनाध्यक्ष नियुक्त करने का विज्ञान है। विश्व की शासन व्यवस्था मानवीय माध्यमों से अध्यात्म विज्ञान के संस्थापक एवं संरक्षक संचालित करेंगे। पूरे विश्व की कमाण्ड एक सहायक/मसीह/कल्कि अवतार के अधीन आ जाएगी।

२०४.सावधानियांः- मानवीय बुद्धि जहां समाप्त होती है वहां से अध्यात्म विज्ञान प्रारम्भ होता है। इस काल में मानवीय बुद्धि से कपट चालाकी की राजनीति का कोई स्थान नहीं होगा। ऐसे लोग असफल प्रयास नहीं करें। सुषुम्ना नाड़ी में संचित पुण्य कर्मों के आधार पर शासनाध्यक्षों के पद आवंटित किए जाएंगे ईश्वरीय सहस्त्राार कला से। प्रत्येक कार्य के लिए जिम्मेदारी तय होगी। अयोग्य शासकों को तुरन्त प्रभाव से हटा दिया जाएगा। कोर्ट कचहरी के लम्बे चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे। सारा विश्व सहस्त्रार से संचालित होगा। सबसे बड़ा न्यायालय मानव का सहस्त्रार होगा।

२०५.ज्ञानार्जन अन्तर्मुखी होकर सहस्त्रार से ही किया जाएगा। बाहर किसी बड़ी उपाधि की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। हां, वैदिक ज्ञान पर आधारित पाठशालाएं विधाध्ययन कराती रहेगी। विधादान जारी रहेगा। भारतीय पद्धति से शैक्षणिक व्यवस्थाएं सुचारु रूप से चलती रहेगी। भौतिक विज्ञान ने जो तकनीकी विकास किया है उसका सदुपयोग सृजन कार्यों में होता रहेगा युगानुसार तथा समयानुसार। अनावश्यकताएं हटा दी जाएगी। जो शिक्षा नकारात्मक सोच

को जन्म देती है उसका कोई स्थान नहीं होगा। शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में व्यापक संशोधन होंगे। भारतीय संविधान में भी व्यापक संशोधन होंगे। जिसकी शुरूआत प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कर दी है। अनावश्यक नियम कानून हटा दिए जाएंगे। गतिरोध डालने वाले नियम कानून समाप्त किए जाएंगे। अनावश्यक देरी, भ्रष्टाचार को पनपाने वाले नियम कानून समाप्त किए जाएंगे। सतयुग का नया संविधान तथा नया सतयुगी विश्व। पूरा विश्व परमेश्वर का परिवार इसी को ध्यान में रखकर संविधान की रूपरेखा तय की जा चुकी है। कोई विवादास्पद मुद्दा ही नहीं रहेगा। तुरन्त निर्णय, त्वरित कार्यवाहियां होगी। शासन तथा सरकारें पंगू नहीं होगी। शासन सताएं कर्तव्यनिष्ठ तथा धर्मनिष्ठ मानवों के हाथों में होगी तथा विश्व मानव कल्याणार्थ कार्य करेगी।

२०६.संज्ञान पद्धति बहुत प्रभावी तथा त्वरित होगी। उसके निर्णयों में वर्ष नहीं लगेंगे। कागज आधारित न्यायप्रणाली के स्थान पर मानव की आत्मा तथा वचनों पर आधारित न्याय प्रणाली होगी। मूर्ते जीवित होंगे। मानव मन में भी झूठा सोचते हुए डरेगा, झूठा बोलना तो असम्भव होगा। असत्य तथा अकाल मृत्यु का युग समाप्त हो जाएगा। सतयुग तथा मानवों की १०० वर्ष उम्र का युग होगा।

२०७.अमेरिका में सहायक सरकारें होगी। जो वहां की मानवता की सहायता करेगी। इजरायल में मसीह सरकारें होगी। भारत में कल्कि सरकारें होगी। जिनका नेतृत्व एक ही महान् परमात्मा के हाथ से होता रहेगा आगामी ७००० वर्षों तक।

२०८.भूमण्डलीकरण हो जाएगा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का। कोई दूरियां नहीं रहेगी। सूक्ष्म शरीरों तथा सशरीरों से आकाश मार्ग से यात्राएं होगी अध्यात्म विज्ञान के काल में। रूपयों का महत्व घट जाएगा। अर्थप्रधान युग का स्थान अवतार प्रधान युग ले लेगा।

२०९.अन्त में यह कह दें कि योग के आदि गुरू मत्स्येंद्रनाथ जी का काल होगा तो पूर्णतः सत्य है। सारी रूपरेखा उनके द्वारा निर्धारित है। माध्यम सद्गुरू श्रीमान् रामलाल जी सियाग को बनाया गया है।

२१०.सतकाल अनवरत रूप से आगामी ७००० वर्षों तक चलता ही रहेगा ऐसी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा चुकी है भौतिक जगत में तथा शासकीय जगत में।

२११.सीमा सुरक्षा बल विश्व से हटा दिए जाएंगे। पुलिस की मात्रा नगण्य रह जाएगी। तालों की फैक्ट्रियां बन्द हो जाएगी आवश्यकता नहीं पड़ने के कारण। कितने व्यापक संशोधन होंगे। जिसकी मानवता ने कल्पना नहीं की थी। व्यवस्थाएं पूरी ही बदल दी जाएगी। ऐसा नरसंहार के बाद नवीन व्यवस्थाएं स्थापित की जाएगी जो सतयुगी व्यवस्थाएं होगी। कोई कलयुगी कीड़ा उन सतयुगी व्यवस्थाओं में प्रवेश नहीं कर पाएगा। मोनीटरींग प्रभावी होगी सशक्त तथा प्रबल होगी। लोग अनैतिक कर्तव्यों का मन में सोचते हुए भी कांपेंगे। ईश्वर के नामजप का एक ही नशा रहेगा। केवल अवतार का ध्यान करेंगे। कर्म केवल सतयुगी होंगे विश्व मानवता के। सोच विशुद्ध विज्ञान की जो अध्यात्म विज्ञान।

२१२.पुण्यतिथियां मनाने की परिपाटी भी हटा दी जाएगी। मृत्यु के बाद किसी तरह का कर्मकाण्ड तथा पाखण्ड संसार में नहीं रहेगा। मोक्ष जीते जी होगा। मानवों की उम्र पूरी १०० वर्ष होगी। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरूषार्थ पुनः अपने मूलस्वरूप में बदलेंगे।

२१३.उपरोक्त विश्व का सतयुगी विधान होगा। जिसे विश्व में ध्यान एवं सिद्धयोग नामक भारत सरकार से रजिस्र्ड एन.जी.ओ. नीति आयोग के माध्यम से प्रचारित करने का विश्वनाथमत का स्पष्ट आदेश है। उपरोक्त लेखन के लिए नाथमत जवाबदेह तथा जिम्मेदार है। उपरोक्त विधान में आमूलचूल परिवर्तन करने का किसी को कोई अधिकार नहीं होगा। लिखावट होते ही १०० प्रतिशत सत्यता का वचन महाशिव ने दिया है। सूक्ष्म शरीर से विमोचन करके दाहिना हाथ उठाकर दीर्घकाल तक आशीर्वाद दिया। तन, मन, धन से समर्पण करके लेखक ने दक्षिणा दी तथा प्रसाद अर्पण किया। पूजा अर्चना की गई सूक्ष्म शरीर से प्रकट मत्स्येंद्रनाथ जी की। सयुज्य विश्वनाथमत का वचन दिया। लेखक के शरीर से महाशिव अपने भविष्य के कार्यों को पूर्णता प्रदान करेंगे। आशीर्वाद मुद्रा का चित्र जो प.उ.आ. पर लगा है, बनाया जावे इसके प्रारम्भ में। इस विधान की कोई कीमत नहीं होगी। कोई भी पढ़ सकेगा। कोपीराईट अवश्य होगा।

–महाशिव मत्स्येंद्रनाथ जी द्वारा दि.१८.४.२०२० तिथि वैशाख कृष्ण ११ विक्रम संवत् २०७७.